ॐ

श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान

रचयिता

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा० ब्र० संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	द्वितीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	50 रुपये (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्यासुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	1. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना मोबाइल-9425128817 2. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक परिवार

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है वहीं अतिशय क्षेत्र छत्री मंदिर शिवपुरी में प्रवास के दौरान प्रभु भक्ति करते हुए आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर संयमस्वर्ण महोत्सव मण्डित संतशिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्रीविद्यासागरजीमहाराज के परम शिष्य अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजीमहाराज ने प्रस्तुत कृति '**श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान**' की रचना करके महान् उपकार किया है। तत्त्वार्थसूत्र की पूजा-पाठ व आराधना दसलक्षण पर्व के दिनों में विशेष रूप से की जाती है। दसलक्षण पर्व माघ, चैत्र, भाद्र मासों में प्रति वर्ष तीन बार आते हैं जो कि दस दिन तक चलते हैं जिसमें सुधीश्रावकजन यथायोग्य पूजन-विधान आदि करके जिनेन्द्र भगवान की भक्ति करते हैं। विशेषरूप से भाद्र मास में दसलक्षण पर्व बड़े ही उत्साह और भक्तिभाव से मनाये जाते हैं। प्रस्तुत कृति सभी भव्यजीवों के धर्मध्यान करने में सहायक बनेगी। सैद्धान्तिक विषय होने के कारण कहीं-कहीं छन्दों में स्खलन वा कठिनाई महसूस हो सकती है। कृपया सँभाल के पढ़ें।

इस कृति के संयोजन में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग किया उन सभी को बहुत-बहुत साधुवाद एवं मुनिश्री का आशीर्वाद...। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

-बा० ब्र० संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
०१- मंगल भावना	०५
०२- नवदेवता पूजन	०६
०३- अर्घ्यावली	०९
०४- महाऽर्घ्य-शान्तिपाठ-विसर्जन	१३
०५- सिद्धभक्ति	१६
०६- मंगलाचरण	१७
०७- श्री तत्त्वार्थसूत्र समुच्चय पूजन	१८
०८- प्रथम अध्याय अर्घ्यावली	२१
०९- द्वितीय अध्याय अर्घ्यावली	२९
१०- तृतीय अध्याय अर्घ्यावली	४२
११- चतुर्थ अध्याय अर्घ्यावली	५२
१२- पंचम अध्याय अर्घ्यावली	६२
१३- षष्टम अध्याय अर्घ्यावली	७३
१४- सप्तम अध्याय अर्घ्यावली	८०
१५- अष्टम अध्याय अर्घ्यावली	९०
१६- नवम अध्याय अर्घ्यावली	९८
१७- दसम अध्याय अर्घ्यावली	११०
१९- आचार्य श्री उमास्वामि महाराज का अर्घ्य	११३
१८- महासमुच्चय पूर्णाऽर्घ्य	११४
२०- महासमुच्चय जयमाला	११४
२१- विधान आरती	११६

===

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं॥
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो॥
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥

यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥

ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य (लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम- चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री शान्तिनाथ स्वामी का अर्घ्य (मालती)

जब-जब शान्ति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शान्ति विधान रचाए, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोऽस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री नेमिनाथ स्वामी का अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के...॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नन्दीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नन्दीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।

अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नन्दीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बन्धी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर - अष्टापद - गिरनार - चम्पापुर - पावापुर - कुंडलपुर - पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-महावीरजी-तिजारा-पद्मपुरा-आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमतं भगवंतं कृपालसंतं श्री वृषभादि-वीरांतान् चतुर्विंशति तीर्थंकर आद्यानांआद्ये जम्बूद्वीपे - भरतक्षेत्रे - आर्यखण्डे - भारतदेशे - मध्यप्रदेशे.....जिलान्तर्गते...मासोत्तममासे...मासे...पक्षे...-तिथौ...वासरे--मुनि-आर्यिकाणां-श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादि-महाऽर्घ्यं...।

शान्तिपाठ (हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥

तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्वशान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विसर्जन पाठ (दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडारया सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइ-सेहराणं, णमो सया सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवगहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्क ाणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

(दोहा)

मोक्षमार्ग के नेतृ जो, हरे कर्म गिरिराज।
गुण पाने तत्त्वज्ञ को, सादर नमोऽस्तु आज॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः -४

(जोगीरासा)

है अनादि से जिनशासन की, दया धर्म की धारा।
जिसे आदि से महावीर ने, देकर श्रुत शृंगारा॥
तीर्थंकर बिन आर्ष धर्म की, परम्परा हम पाके।
श्री तत्त्वार्थसूत्र की महिमा, गाएँ शीश झुका के॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - ४

श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम यह, देता धर्म ठिकाने।
चार-चार अनुयोग इसी में, झलकें तत्त्व खजाने॥
श्रुत अध्यात्म साधना का यह, संगम रहा अनोखा।
व्यसन पाप अज्ञान हरे यह, हमें बना दे चोखा॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - ४

गुरु आचार्य उमास्वामी हैं, लेखक वा प्रस्तोता।
दसलक्षण में दस अध्यायी, इसका वाचन होता॥
इक उपवास तुल्य फल इसका, एक बार पढ़ मिलता।
मोक्षमार्ग की बात करें क्या, शुद्धातम भी खिलता॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - ४

द्वादशांग जिनवाणी माँ से, इतनी विनय हमारी।
मिथ्यादर्शन-ज्ञान आदि की, हरो धारणा सारी॥
सम्यग्दर्शन-ज्ञान आदि की, दो अध्यात्म फुहारी।
सो विद्यारथ लेकर 'सुव्रत', पाएँ मोक्ष सवारी॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - ४

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
कर नमोऽस्तु तत्त्वार्थसूत्र को, जग का मंगल होवे॥
ॐ नमः सिद्धेभ्यः - ४

(पुष्पांजलिं...)

श्री तत्त्वार्थसूत्र समुच्चय-पूजन

स्थापना (दोहा)

द्वादशांग में हो रहा, तत्त्वों का उपदेश।
अतः सूत्र तत्त्वार्थ भज, पाएँ आतम देश॥

(शंभु)

जब महावीर प्रभु मोक्ष गए, तो कैसे जग उद्धार करें।
दे तत्त्व देशना कल्याणी, अज्ञान पाप अन्धयार हरें॥
फिर बुद्धिमन्दता आई तो, लिपिबद्ध धर्म के सूत्र हुए।
सो रचित उमास्वामी गुरु का, तत्त्वार्थसूत्र श्रुत हृदय छुए॥

(दोहा)

मन मंदिर में स्थाप के, भजें सूत्र तत्त्वार्थ।
श्रुत देवा जयवंत हों, मिले स्वस्थ परमार्थ॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(चौपाई)

मिथ्याश्रुत जल सिंचन करता, जन्म मरण दुख सागर भरता।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, जल अर्पित कर सम्यक् कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

मिथ्याश्रुत के अंगारों से, हम तपते हैं लाचारों से।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, चंदन से भज शीतल कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

मिथ्याश्रुत भव भ्रमण कराये, निज में ना विश्राम दिलाए।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, अक्षत से भज अक्षय कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

मिथ्याश्रुत दे काम कथाएँ, सो निज बाग भस्म हो जाएँ।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, पुष्प चढ़ा निज ब्रह्म सुमर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

मिथ्याश्रुत रसपान करेंगे, तो कैसे निज स्वाद चखेंगे।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, सो नैवेद्य समर्पित कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

मिथ्याश्रुत के जहाँ उजाले, हुए भविष्य वहाँ पर काले।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, दीप जला निज प्रकाश कर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

मिथ्याश्रुत दे कर्म व्यथाएँ, जिससे चिदानन्द न पाएँ।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, खेकर धूप कर्म सब हर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

मिथ्याश्रुत के फल जब पाते, खुद रोते सब जगत रुलाते।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, फल को चढ़ा मोक्षफल वर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

मिथ्याश्रुत का जाल बिछा है, जिसमें सब संसार फँसा है।
जो तत्त्वार्थसूत्र से हर लें, अर्घ्य चढ़ा शाश्वत सुख भर लें॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

हितकर प्रभु सर्वज्ञ हैं, वीतराग भगवान।
जिनके श्री मुख कमल से, झरे भेद-विज्ञान॥
झरे भेद-विज्ञान सो, भक्त हरें अज्ञान।
हम तो नमोऽस्तु कर करें, हित साधक गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

हमने यही सुना कि सबका, बड़ा लाड़ला ज्ञान रहा।
ज्ञान बिना कुछ काम बने ना, यह सब का भगवान रहा॥
धर्म संत यह कहते हैं कि, ज्ञान चेतना का गुण है।
लेकिन आज विश्व में दिखता, ज्ञान सभी का अवगुण है॥ १॥
अंतर्मुखी सुखी जो करता, बहिर्मुखी वह दुखी करे।
आखिर यह किस तरह हुआ कि, सुखकर्त्ता ही दुखी करे॥
कहीं न जग में दिखे सुरक्षा, ताण्डव हैं आतंकों के।
मिथ्यामत के जाल बिछे हैं, भ्रम हैं मिथ्या पंथों के॥ २॥
अब कैसे अपना हित होगा, ऐसा भाव रखेगा जो।
वह तत्त्वार्थसूत्र पूजेगा, अघ अज्ञान हरेगा वो॥

जैन धर्म का सर्वोत्तम वह, सेवक माना जाएगा।
जो व्रत संयम दीक्षा लेकर, धर्म ध्वजा फहरायेगा॥३॥
हाँ! यह वह तत्त्वार्थसूत्र है, ग्रन्थराज जो ग्रन्थों का।
दस अध्यायी मोक्षशास्त्र है, नाशक मिथ्या पंथों का॥
पूज्य उमास्वामी विरचित यह, आद्य ग्रन्थ है संस्कृत का।
उपदेशक है रत्नत्रय वा, तत्त्व आदि सम्यक् श्रुत का॥४॥
प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं, सब अनुयोग झलकते हैं।
वर्तमान विज्ञान विषय के, समाधान सब होते हैं॥
ज्ञान भेद-विज्ञान सभी के, देशामर्सक सूत्र यही।
जैनमेरु यह मुक्तिवधू का, सम्यक् मंगलसूत्र यही॥५॥
दस अध्यायों के पाठन से, मिले एक उपवास सुफल।
यूँ ही मिलें सफलताएँ सब, मिले मोक्षपथ मोक्षमहल॥
शास्त्र पठन-पाठन की भूलें, क्षमा करें माँ कल्याणी।
ज्ञान ऋद्धि निज विद्या देना, सरस्वती माँ जिनवाणी॥६॥

(दोहा)

उमास्वामी महाराज का, भजें सूत्र तत्त्वार्थ।
'सुव्रत' भव भय दुख हरें, सिद्ध करें परमार्थ॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, तत्त्वार्थसूत्र श्रुतराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

प्रथम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः।

निकट भव्य जो गुरु से पूछे, हित क्या हित साधन।
हित है मोक्ष मोक्षपथ साधन, गुरु के यही वचन॥
सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरण मिल, मोक्षमार्ग बनते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्।

ज्यों है तत्त्व स्वरूप अगर त्यों, स्वीकारे चेतन।
तो तत्त्वार्थ रूप श्रद्धा वह, है सम्यग्दर्शन॥
मोक्षशास्त्र आरम्भ इसी से, उमास्वामी करते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थश्रद्धान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

तन्-निसर्गा-दधिगमाद् वा।

निसर्ग व अधिगम दो विध से, सम्यग्दर्शन हो।
निसर्ग अपने आप स्वयं ही, सहज रूप से हो॥
जो उपदेशों से हो उसको, अधिगम गुरु कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

जीवा-जीवास्त्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा मोक्षास्-तत्त्वम्।

प्रथम जीव अजीव आस्त्रव फिर, रहे बन्ध संवर।
क्रमिक निर्जरा मोक्ष अंत में, तत्त्व कहे जिनवर॥
मोक्षशास्त्र में सात तत्त्व को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीवादितत्त्व निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

नाम-स्थापना-द्रव्य-भाव-तस्तन्न्यासः।

पूर्व कथित उन सम्यग्दर्शन, तत्त्व आदि श्रुत का।
नाम स्थापना द्रव्य भाव से, न्यास करें सबका॥
मोक्षशास्त्र में भेद विवक्षा, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नामादिनिक्षेप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

प्रमाण-नयै-रधिगमः।

सम्यग्दर्शन तत्त्व आदि का, कैसे ज्ञान करें।
प्रमाण और नयों से उनका, स्वरूप ज्ञान करें॥
मोक्षशास्त्र में प्रमाण नय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रमाणनय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः।

तत्त्व आदि को और समझने, निर्देश से समझो।
स्वामी साधन अधिकरण थिति, विधान से समझो॥
मोक्षशास्त्र में मार्ग मार्गणा, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निर्देशादि निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्प-बहुत्वैश्च।

फिर सत् संख्या क्षेत्र स्पर्शन, और काल अंतर।
भाव अल्प-बहुत्व से उनको, समझाये गुरुवर॥
मोक्षशास्त्र में अनुयोगों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सत्संख्यादि निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

मति-श्रुता-वधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम्।

मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधि वा, ज्ञान मनःपर्यय।
केवलज्ञान ज्ञान हैं सम्यक्, जिनकी बोलें जय॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

तत्प्रमाणे।

मति आदिक जो पाँच ज्ञान हैं, सम्यग्ज्ञान वही।
दो प्रकार के प्रमाण होते, आगम वचन यही॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान प्रमाणिक, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञान-प्रमाण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

आद्ये परोक्षम्।

पाँच ज्ञान में प्रथम ज्ञान दो, परोक्ष प्रमाण रहे।
मतिज्ञान श्रुतज्ञान परोक्ष हैं, जिन सिद्धांत कहे॥
मोक्षशास्त्र में इन्द्रि ज्ञान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री परोक्षप्रमाण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

प्रत्यक्ष-मन्यत्।

शेष ज्ञान जो तीन रहे हैं, वो प्रत्यक्ष प्रमाण।
अवधि मनःपर्यय वा केवल, सादर जिन्हें प्रणाम॥
मोक्षशास्त्र में पूज्य ज्ञान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रत्यक्षप्रमाण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ता-भिनि-बोध इत्य-नर्थान्तरम्।

मति स्मृति संज्ञा व चिन्ता, अभिनिबोध ये तो।
मतिज्ञान के नाम रहे हैं, भेद अधिक वे तो॥
मोक्षशास्त्र में मति का विवरण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञान-पर्याय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

तदिन्द्रिया-निन्द्रिय-निमित्तम्।

मतिज्ञान इन्द्री वा मन के, शुभ निमित्त द्वारा।
हो उत्पन्न तभी आगम में, श्रद्धा से प्यारा॥
मोक्षशास्त्र में मति उत्पत्ति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञान-निमित्त निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

अव-ग्रहे-हावाय-धारणाः।

मतिज्ञान के चार भेद में, प्रथम अवग्रह है।
ईहा अवाय अंत धारणा, इनका क्रम यह है॥
मोक्षशास्त्र में मति भेदों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

बहु-बहुविध-क्षिप्रा-निःसृता-नुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम्।

बहु बहुविध वा क्षिप्र अनिःसृत, अनुक्त और हो ध्रुव।
एक एक विध अक्षिप्र निःसृत, उक्त तथा अध्रुव॥
मोक्षशास्त्र में मति विश्लेषण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानबहुभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

अर्थस्य।

हर वस्तु के अवग्रह ईहा, अवाय धारणाएँ।
चारों मतिज्ञान हो जिनसे, निर्णय हो पाएँ॥
मोक्षशास्त्र में अर्थ-व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञान-विशेषणभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

व्यञ्जनस्यावग्रहः।

शब्द आदि अव्यक्त रूप को, व्यंजन कहते हैं।
उनका मात्र अवग्रह होता, गुरुजन कहते हैं॥
मोक्षशास्त्र में इन्द्रिय अंतर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञानविषयभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम्।

नेत्र और मन से व्यंजन के, नहीं अवग्रह हों।
तीन शतक छत्तीस भेद कुल, मतिज्ञान के हों॥
मोक्षशास्त्र में मति भिन्नता, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिज्ञान-निषेधविषय-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

श्रुतं मति-पूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम्।

मतिज्ञान पूर्वक जो होता, वह श्रुतज्ञान कहा।
दो अनेक बारह प्रकार का, सम्यग्ज्ञान रहा॥
मोक्षशास्त्र में श्रुतज्ञानों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री श्रुतज्ञानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणाम्।

दो प्रकार के अवधिज्ञान में, भवप्रत्यय पहला।
देव नारकी जन को होता, देश प्रत्यक्ष भला॥
मोक्षशास्त्र में भवप्रत्यय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भवप्रत्यय-अवधिज्ञानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।

अवधिज्ञान का भेद दूसरा, हुआ क्षयोपशम से।
छह प्रकार का नर पशुओं को, होता आतम से॥
मोक्षशास्त्र में अवधिज्ञान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री क्षयोपशमप्रत्यय अवधिज्ञानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः।

दूजा देश प्रत्यक्ष पूज्य है, ज्ञान मनःपर्यय।
ऋजुमति और विपुलमति दो विध, जिनकी होती जय॥
मोक्षशास्त्र में मनःपर्यय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनःपर्ययज्ञानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

विशुद्ध्य-प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।

ऋजुमति और विपुलमति में कुछ, विशेषता होती।
विशुद्धता अप्रतिपात से, अंतरता होती॥
मोक्षशास्त्र में निर्मलता को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विशुद्ध-मनःपर्ययज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्ययोः।

विशुद्धता व क्षेत्र स्वामी वा, विषय अपेक्षा से।
अवधिज्ञान व मनःपर्यय में, अंतर आभासे॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान भिन्नता, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अवधि-मनःपर्ययज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

मति-श्रुतयो-र्निबन्धो द्रव्येष्-वसर्व-पर्यायेषु।

मतिज्ञान श्रुतज्ञान विषय की, रही प्रवृत्ति जो।
सब द्रव्यों की कुछ पर्याएँ, तक ही सिमटी वो॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मतिश्रुतज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

रूपिष्-ववधेः।

अवधिज्ञान स्वीकारे केवल, रूपी द्रव्यों को।
मतलब अवधिज्ञान जानता, रूपी द्रव्यों को॥
मोक्षशास्त्र में अवधि विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अवधिज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

त-दनन्त-भागे मनःपर्ययस्य।

अवधिज्ञान के अनन्त भाग तक, जो भी रहे विषय।
रूपी सूक्ष्म विषय वो जाने, ज्ञान मनःपर्यय॥
मोक्षशास्त्र में सूक्ष्म विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनःपर्ययज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य।

सब द्रव्यों की सब पर्याएँ, जिसमें आ झलकें।
केवलज्ञान वही है जिसको, झुक जाती पलकें॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान केवली, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

एकादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना-चतुर्भ्यः।

एक जीव में एक साथ हो, एक आदि लेकर।
चार ज्ञान तक हो सकते हैं, समझो तो गिनकर॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बहुज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

मति-श्रुता-वधयो विपर्ययश्च।

मतिज्ञान श्रुत अवधिज्ञान ये, मिथ्या भी होते।
कुमतिज्ञान कुश्रुत अवधि ये, तत्त्व विषय खोते॥
मोक्षशास्त्र में मिथ्या तजने, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री कुज्ञानरहित-सम्यग्ज्ञान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

स-दसतो-रवि-शेषाद्-यदृच्छोप-लब्धे-रुन्मत्तवत्।

सत् या असत् पदार्थों में यदि, सम्यग्ज्ञान नहीं।
फिर पागल सम करें क्रिया तो, मिथ्याज्ञान यही॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान समझने, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञान-स्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

नैगम-संग्रह-व्यवहा-रर्जु-सूत्र-शब्द-समभि-रूढैवं-भूतानयाः।

नैगम संग्रह नय व्यवहारा, ऋजुसूत्र वा शब्द।
समभिरूढ़ फिर एवंभूता, बतलाए नय सप्त॥
मोक्षशास्त्र में सप्त नयों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सप्तनय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

संसार में मिथ्यात्व से बढ़कर, नहीं दुख पाप हो।
सम्यक्त्व से बढ़कर न सुख, तत्त्वार्थ से जो प्राप्त हो॥
पहले सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले मिथ्यात्व हरने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ पहला अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, सम्यक् जीव उपाय॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र प्रथम-अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

प्रथम सूत्र अध्याय दे, सम्यग्दर्शन ज्ञान।
विघ्न हरण मंगलकरण, हर लेता अज्ञान॥
हर लेता अज्ञान दुख, दूर करे मिथ्यात्व।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, ज्ञानी सम सम्यक्त्व॥

(ज्ञानोदय)

मिथ्यादर्शन ज्ञान चरित्रा, मोहमार्ग इनको कहते।
जो अनादि से हर चेतन में, बिना अपेक्षा के रहते॥
उमास्वामी आचार्य सूत्र यह, देख हुए विचलित थोड़े।
जिससे मिथ्या मोह हटाकर, सम्यक् मोक्ष शब्द जोड़े॥१॥
किए रचित तत्त्वार्थसूत्र फिर, पूर्वाचार्यों के अनुसार।
जिसके पाठन पठन मनन से, हुई धर्म की जय जयकार॥
किए मंगलाचरण प्रथम हम, प्रथम सूत्र अध्याय पढ़े।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रा, जिससे मिथ्या टूट पड़े॥२॥
इस विध कुल तेंतीस सूत्र को, अर्घ्य चढ़ाकर के पूजा।
इस कृति वा कृतिकार सरीखा, दिखे न जग में कुछ दूजा॥
सो तत्त्वार्थसूत्र से शिक्षा, लेकर जीवन धन्य करें।
अनुष्ठान कर गुरु आज्ञा को, पालन करें प्रसन्न करें॥३॥
रत्नत्रय ही सारभूत है, जो पाने पुरुषार्थ करें।
इतना भी यदि कर न सके तो, मिथ्या को ना पुष्ट करें॥
कम से कम इतना तो करना, सम्यक् तत्त्व समझने को।

पढ़े प्रथम अध्याय सूत्र सब, मिथ्या पथ से बचने को॥४॥
नय प्रमाण से न्याय शास्त्र की, गुरु जिज्ञासा शान्त किए।
मिथ्या श्रुत माया में उलझे, ज्ञान जाल का अंत किए॥
सो हमको हे! सूत्र देवता, ज्ञान ऋद्धि की विद्या दो।
जिससे 'सुव्रत सु-व्रत कर लें, तत्त्व सिद्धि की शिक्षा दो॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र प्रथम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह पहला अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

द्वितीय अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

औप-शमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च।

उपशम क्षायिक मिश्र औदयिक, भाव पारिणामिक।
पाँचों तत्त्व जीव के अपने, समझे इन्हें क्रमिक॥
मोक्षशास्त्र में भाव भंगिमा, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भाव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

द्वि-नवाष्टा-दशैक-विंशति-त्रि-भेदा यथा-क्रमम्।

उक्त पाँच भावों के क्रमशः, भेद इस तरह हैं।
दो नौं अठरह इक्कीस व त्रय, जो कुल त्रेपन हैं॥
मोक्षशास्त्र में भाव भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भावभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

सम्यक्त्व-चारित्रे।

प्रथम भाव जो औपशमिक है, दो प्रकार का इष्ट।
औपशमिक सम्यग्दर्शन वा, औपशमिक चारित्र॥
मोक्षशास्त्र में औपशमिक को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री औपशमिक-भावभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणि च।

क्षायिक भेद ज्ञान दर्शन वा, दान लाभ भोगा।
फिर उपभोग वीर्य सम्यक् वा, चारित का योगा॥
कुल नौं भेद भाव क्षायिक के, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-भावभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

ज्ञाना-ज्ञान-दर्शन-लब्धयश्-चतुस्त्रि-त्रि पञ्चभेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमा-संयमाश्च।

चार ज्ञान अज्ञान तीन वा, तीनों ही दर्शन।
पाँच लब्धियाँ सम्यक् चारित, वा संयमासंयम॥
क्षायोपशमिक भेद अठारह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री क्षायोपशमिक-भावभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शना-ज्ञाना-संयता सिद्ध-लेश्याश्-चतुश्-चतुस्त्र्ये-कै-कै-कैक-षड्भेदाः।

चउगति चार कषाय लिंग त्रय, इक मिथ्या अज्ञान।
एक असंयम असिद्ध भी इक, छह लेश्या पहचान॥

भाव औदयिक कुल इक्कीसों, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री औदयिक-भावभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

जीव-भव्या-भव्यत्वानि च।

जीवत्व भाव भव्यत्व भाव वा, अभव्यत्व सारे।
भेद पारिणामिक के तीनों, जीवों के न्यारे॥
मोक्षशास्त्र में पारिणामिक, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पारिणामिक-भावभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

उपयोगो लक्षणम्।

है उपयोग जीव का लक्षण,ना अन्यत्र मिलें।
मिले मात्र चैतन्य दशा में, इसे याद रख लें॥
मोक्षशास्त्र में चेतन लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीवलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः।

वह उपयोग रहा दो विध का, प्रथम ज्ञान उपयोग।
जो खुद आठ तरह का दूजा, है दर्शन उपयोग॥
यह दर्शन उपयोग चार विध, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री उपयोगभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

संसारिणो मुक्ताश्च।

वे उपयोगवान प्राणी तो, दो प्रकार के हों।
प्रथम रहे संसारी प्राणी, मुक्त दूसरे हों॥
मोक्षशास्त्र में जीव भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

सम-नस्का-मनस्काः।

इन संसारी प्राणी के भी, दो दो भेद रहे।

प्रथम रहे मन वाले दूजे, मन से रहित रहे॥
मोक्षशास्त्र में संसारी को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संसारीजीवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

संसारिणस्-त्रस-स्थावराः।

त्रस थावर के भेदों से भी, संसारी प्राणी।
दो प्रकार के बतलाए हैं, सुन लो गुरुवाणी॥
मोक्षशास्त्र में जगत दशा को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संसारीदशा-जीवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

पृथिव्यप्-तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः।

पृथ्वीकायिक जलकायिक वा, अग्निकायिक ये।
वायु और वनस्पतिकायिक, पाँच तरह के ये॥
मोक्षशास्त्र में स्थावर को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री स्थावरजीवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

द्वीन्द्रिया-दयस्-त्रसाः।

जो दो इन्द्री तीन चार वा, पंचेन्द्री प्राणी।
ये सब ही त्रस कहलाते हैं, एसी जिनवाणी॥
मोक्षशास्त्र में त्रस जीवों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री त्रसजीव भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

पञ्चेन्द्रियाणि।

कहो? इन्द्रियाँ कितनी होतीं, यही जानना है।
सुनो! इन्द्रियाँ पाँच बताई, यही मानना है।
मोक्षशास्त्र में इन्द्री संख्या, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रीसंख्या निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

द्विविधानि।

वे पाँचों जो रहीं इन्द्रियाँ, जन्में आतम से।
वे सब दो- दो प्रकार की हों, समझो आगम से॥
मोक्षशास्त्र में भेद इन्द्रियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रीभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

निर्वृत्त्युप-करणे द्रव्येन्द्रियम्।

प्रथम रही द्रव्येन्द्रिय जो कुछ, ऐसे ही बनती।
निवृत्ति उपकरण रूप में, जीवों में रहती॥
मोक्षशास्त्र में द्रव्येन्द्रिय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्येन्द्रिय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम्।

दूजी इन्द्रिय भावेन्द्रिय का, अब व्याख्यान करें।
लब्धि और उपयोग रूप में, धारण जीव करें॥
मोक्षशास्त्र में भावेन्द्रिय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भावेन्द्रिय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुःश्रोत्राणि।

स्पर्शन रसना घ्राण चक्षु व, श्रोत्र नाम वाली।
क्रम से होती पाँच इन्द्रियाँ, निजी विषय वाली॥
मोक्षशास्त्र में इन्द्रिय क्रम को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रिय-नाम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्-तदर्थाः।

स्पर्श रस गन्ध वर्ण वा, शब्द विषय उनके।
क्रमशः क्रमशः कहे गए हैं, हम सीखें सुन के॥
मोक्षशास्त्र में इन्द्रि-विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रिय-विषय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

श्रुत-मनिन्द्रि-यस्य।

मन का क्या उपयोग विषय है, यह भी पढ़ना है।
मन का विषय रहा श्रुत-आगम, यही समझना है॥
मोक्षशास्त्र में मनो-विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनो-विषय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

वनस्पत-यन्ताना-मेकम्।

भू जल अग्नि वायु वनस्पति, तक जो जीव रहे।
उनकी बस स्पर्शन इन्द्रिय, होती सूत्र कहे॥
मोक्षशास्त्र में पहली इन्द्रिय, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री स्पर्शन-इन्द्रिय-विषय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्या-दीना-मेकैक-वृद्धानि।

फिर कृमि चींटी भ्रमर आदि वा, जो मनुष्य इनमें।
एक-एक हों अधिक इन्द्रियाँ, क्रमशः ही जिन में॥
मोक्षशास्त्र में इन्द्रिय स्वामी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री इन्द्रि-स्वामी निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

संज्ञिनः समनस्काः।

मन वाले जो जीव जगत में, अब क्या उन्हें कहें।
मन वाले जो जीव जगत में, संज्ञी उन्हें कहे।
मोक्षशास्त्र में संज्ञी प्राणी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संज्ञी-जीव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

विग्रह-गतौ कर्म-योगः।

देह प्राप्ति को जो गति होती, वह विग्रह गति है।
उसमें कार्मण काय योग हो, जिन-माँ कहती है॥
मोक्षशास्त्र में विग्रहगति को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विग्रहगति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

अनुश्रेणि गतिः।

गगन प्रदेशों की पंक्ति के, जो कुछ चिह्न मिले।
श्रेणी के अनुसार उन्हीं पर, पुद्गल जीव चले॥
मोक्षशास्त्र में अनुश्रेणिगति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनुश्रेणिगति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

अविग्रहा जीवस्य।

जिसमें नहीं कुटिलता होती, जो ऋजुगति होती।
मुक्तजीव के बिन विग्रह की, वो ही गति होती॥
मोक्षशास्त्र में मुक्त गमन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तजीव-गति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः।

विग्रह की वा बिन विग्रह की, संसारी गति हो।
चार समय के पूर्व तीन तक, विग्रह की गति हो॥
मोक्षशास्त्र में विग्रह गति को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संसारीजीव-गति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

एक-समया-विग्रहा।

बिन मोड़ा के जो गति होती, वह विग्रह गति है।
एक समय वाली वह होती, ये ही सन्मति है॥
मोक्षशास्त्र में समय सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संसारीजीव-गतिसमय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

एकं द्वौ त्रीन्वाना-हारकः।

मोड़ा वाली विग्रह गति में, जीव रहें कब तक।
एक समय दो-तीन समय तक, रहें अनाहारक॥
मोक्षशास्त्र में समय व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनाहारक-समय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म।

पर गति में जा तीन तरह से, लेते जीव जनम।
सम्मूर्च्छन है प्रथम गर्भ फिर, हो उपपाद जनम॥
मोक्षशास्त्र में जनम भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जन्मभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्-चैकशस्-तद्-योनयः।

सचित्त अचित्त शीत उष्ण वा, संवृत विवृत की।
मिश्र मिला नौ हुई योनियाँ, जन्म व्यवस्था की॥
कुल चौरासी लाख योनियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री योनिभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः।

गर्भ योनियाँ तीन तरह की, प्रथम जरायुज हैं।
दूजी अण्डज पोत तीसरी, ये सब गर्भज हैं॥
मोक्षशास्त्र में गर्भ जन्म को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भजन्म निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

देव-नारकाणा-मुपपादः।

किन-किन जीवों का होता है, वो उपपाद जनम।
देव नारकी का होता है, वो उपपाद जनम।
मोक्षशास्त्र उपपाद जन्म को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री उपपादजन्म निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३४॥

शेषाणां सम्मूर्च्छनम्।

देव नारकी गर्भ जन्म के, जो अतिरिक्त रहे।
हो सम्मूर्च्छन जन्म उन्हीं का, ऐसा सूत्र कहे॥
मोक्षशास्त्र में सम्मूर्च्छन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मूर्च्छनजन्म निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३५॥

औदारिक-वैक्रियि-काहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि।

औदारिक वैक्रियक आहारक, तैजस कार्मण ये।
पाँच तरह के शरीर होते, क्रमशः-क्रमशः ये॥
मोक्षशास्त्र में देह भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देहभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३६॥

परं परं सूक्ष्मम्।

क्रमशः-क्रमशः आगे वाले, जो शरीर होते।
सूक्ष्म सूक्ष्म वे कहे गए या, सूक्ष्म सूक्ष्म होते॥
मोक्षशास्त्र में देह व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देहव्यवस्था निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३७॥

प्रदेशतोऽसंख्येय-गुणं प्राक् तैजसात्।

औदारिक वैक्रियक आहारक, तैजस के पहले।
असंख्यात गुण रहे प्रदेशी, तीनों देह भले॥
मोक्षशास्त्र में प्रदेश गणना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देहप्रदेश निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३८॥

अनन्त-गुणे परे।

आगे वाले तैजस कार्मण, जो शरीर होते।
वे अनन्त गुण प्रदेश वाले, क्रम क्रम से होते॥
मोक्षशास्त्र में तैजस कार्मण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तगुण-प्रदेश निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३९॥

अप्रती-घाते।

तैजस कार्मण प्रतिघात बिन, शरीर दोनों हों।
गमनागमन लोक में करने, इन्हें न बाधा हों॥
मोक्षशास्त्र में निर्बाधा को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अप्रतिघात निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४०॥

अनादि-सम्बन्धे च।

तैजस कार्मण का अनादि से, आतम से सम्बन्ध।
औदारिक वैक्रियक आहारक, के जब तब अनुबन्ध॥
मोक्षशास्त्र में तन आतम को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिसम्बन्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४१॥

सर्वस्य।

सब संसारी जीवों से तो, तैजस कार्मण के।
है सम्बन्ध अनादिकाल के, साधारण सबके।
मोक्षशास्त्र में सार्वजनिक तन, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देहजीव-सम्बन्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४२॥

तदादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना-चतुर्भ्यः।

एक जीव में कम से कम दो, तैजस कार्मण हों।
और अधिकतम तीन चार तक, तन हो सकते हों॥
मोक्षशास्त्र में देह अधिकतम, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री एकादिदेह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४३॥

निरुप-भोग-मन्त्यम्।

अंतिम तन उपभोग रहित है, ऐसा आगम है।
जिसे इन्द्रियाँ देख न सकती, वह कार्मण तन है॥
मोक्षशास्त्र में कार्मण तन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निरुपभोग निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४४॥

गर्भ-सम्मूर्च्छनज-माद्यम्।

गर्भ और सम्मूर्च्छन से जो, नर पशु जन्म धरें।
उनका औदारिक तन होता, गुरु व्याख्यान करें॥
मोक्षशास्त्र में जन्म चिह्न को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भजन्म-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४५॥

औपपादिकं वैक्रियिकम्।

जो उपपाद जन्म से जन्में, देव नारकी वो।
उनका वैक्रियक शरीर होता, ऋद्धीधारी वो॥
मोक्षशास्त्र में उपपादों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री उपपादजन्म-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४६॥

लब्धि-प्रत्ययं च।

वैक्रियक शरीर लब्धि से भी, पैदा हो जाता।
तप विशेष की ऋद्धि शक्ति, लब्धि कहा जाता॥
मोक्षशास्त्र में लब्धि प्रत्यय, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लब्धि-प्रत्यय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४७॥

तैजस-मपि।

तैजस शरीर भी तो लब्धि, द्वारा से होता।
अनिःसरण निःसरण शुभाशुभ, दो प्रकार होता॥
मोक्षशास्त्र में लब्धि भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लब्धिभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४८॥

शुभं विशुद्ध-मव्या-घाति चा-हारकं प्रमत्त-संयतस्यैव।

आहारक तन शुभ विशुद्ध वा, घात रहित नित हो।
तीर्थ वन्दना जिज्ञासा को, अंतरमुहूर्त हो॥
प्रमत्तसंयत मुनि को हो यह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आहारकदेह-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४९॥

नारक-सम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि।

जीव नारकी नरकों के वा, जो सम्मूर्च्छन हों।
नर नारी बिन द्रव्य भाव से, मात्र नपुंसक हों॥
मोक्षशास्त्र में वेद नपुंसक, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नपुंसकवेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५०॥

न देवाः।

शुभ गति नाम कर्म उदयों से, जीव देव जो हों।
वेद नपुंसक उन्हें न होता, नर नारी वो हों॥
मोक्षशास्त्र में देवलिंग को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवलिंग निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५१॥

शेषास्-त्रिवेदाः।

शेष जीव गर्भज नर पशु हों, तीन वेद वाले।
स्त्री पुरुष नपुंसक तीनों, द्रव्य भाव वाले॥
मोक्षशास्त्र में तीन वेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिवेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५२॥

औप-पादिक-चरमोत्तम-देहा-संख्येय-वर्षा-युषोऽनप-वर्त्या-युषः।

देव नारकी उपपादी वा, चरमोत्तम तन की।
असंख्यात वर्षों की आयु, भोगभूमि जन की॥
अकाल मरण कभी ना होता, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अकालमृत्यु-रहित निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५३॥

पूर्णार्घ्यं (हरिगीतिका)

सब खेल भावों के जगत में, जो करें सबको दुखी।
सो अशुभ को त्याग शुभकर, भावना हो शुद्ध की॥
दूजे सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य लेकर शुद्ध बनने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ दूजा अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, हो शुभ शुद्ध सुभाव॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र द्वितीय अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

दूजा यह अध्याय दे, शुद्ध भाव विज्ञान।
अशुभ त्याग शुभ में रमें, करलें निज कल्याण॥

करलें निज कल्याण सो, जनम मरण हों दूर।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, शुद्ध भाव भरपूर॥

(ज्ञानोदय)

हैं चैतन्य अनन्त शक्तियाँ, जिसमें भाव शक्ति न्यारी।
शुद्ध अशुद्ध भाव दो विध के, करें चेतना संसारी॥
शुद्ध भाव से मोक्ष प्राप्त हो, भेद अशुद्ध भाव के दो।
प्रथम अशुभ दे भव-भव भटकन, जनम मरण फिर जिससे हो॥ १॥
फिर चौरासी लाख योनियाँ, चारों गति के दुख भोगें।
प्रचुर अशुभ कलंक भावों से, निगोद जैसे दुख भोगें॥
कभी मुक्ति के योग्य बने ना, जिससे अशुभ भाव त्यागें।
शुभ भावों की संभाल करने, माया मिथ्या से जागें॥२॥
धर्म रूप परिणाम करें शुभ, सम्यक् व्रत दीक्षा धारें।
फिर मुनि व्रत निर्दोष पालकर, शुभ भावों को शृंगारें॥
चुल्लू भर संसार बचेगा, दुर्गति के दुख योग टलें।
शुद्ध भाव की बने भूमिका, शुद्धातम संयोग मिलें॥३॥
केवलज्ञान मोक्ष फिर होगा, सब भावों के खेल यहाँ।
सो नित बचें अशुभ भावों से, शुभ भावों की खोज यहाँ॥
शुद्ध भाव की करें साधना, सो तत्त्वार्थसूत्र पढ़िये।
भाव समझ कर दुख से बचिये, भाव दरिद्र नहीं करिये॥४॥
जैसे-तैसे कैसे भी हो, दुख संकट कुछ भी आएँ।
आज नहीं तो कल गुजरेंगे, किन्तु भाव न डिग पाएँ॥
यह शिक्षा अध्याय दूसरा, देता है सो मनन करें।
'सुव्रत' निज 'विद्या' पाने को, उमास्वामी को नमन करें॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र द्वितीय अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह दूजा अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

तृतीय अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभा-भूमयो घनाम्बु-वाता-काश-प्रतिष्ठाः सप्ता-धोऽधः।

रत्न शर्करा बालु पंक वा, धूम तमः धरतीं।
महातमः ये प्रभा सात क्रम, निम्न-निम्न रहतीं॥
घनाम्बु-वात व गगन सहारे, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अधोलोक-नरकभूमि निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

तासु त्रिंशत्-पञ्च-विंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक-नरक-शत-सहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम्।

उनमें क्रमशः तीस लाख फिर, पच्चीस पन्द्रह दस।
तीन पाँच कम एक लाख वा, पाँच नरक हों बस॥
मोक्षशास्त्र में अधोलोक को, उमास्वामी कहते॥
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरकभूमि-बिलसंख्या निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

नारका नित्या-शुभतर-लेश्याः परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः।

जीव नारकी सदा अशुभतर, लेश्याओं वाले।
रूप आदि परिणाम अशुभ हों, अशुभ देह वाले॥
अशुभ वेदना विक्रिया वाले, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरकस्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

परस्परो-दीरित-दुःखाः।

जीव नारकी आपस में ही, दुख उत्पन्न करें।
एक दूसरे को दुख देकर, खेद रू खिन्न करें॥
मोक्षशास्त्र में नरक दुखों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरकदुःख निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

संक्लिष्टा-सुरो-दीरित-दुःखाश्च प्राक्-चतुर्थ्याः।

चौथी भूमि से पहले तक, जो संक्लेष्ट रहें।
ऐसे असुर नरक में जाकर, उनको दुखी करें॥
मोक्षशास्त्र में कलह दुखों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरकविशेषदुःख निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्-त्रिंशत्-सागरोपमा सत्त्वानां परा स्थितिः।

नरकों में उत्कृष्ट आयु क्रम, एक तीन सागर।
सात तथा दस सत्रह बाईस, व तैतीस सागर॥
मोक्षशास्त्र में नरक आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरक-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

जम्बूद्वीप-लवणो-दादयः शुभ-नामानो द्वीप-समुद्राः।

जम्बू आदिक द्वीप रहे वो, शुभ नामों वाले।
लवण आदि जो सागर वो भी, शुभ नामों वाले॥
मोक्षशास्त्र में मध्यलोक को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मध्यलोक-द्वीपसमुद्र निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

द्वि-र्द्वि-र्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलया-कृतयः।

दुगने-दुगने व्यासों के वे, सभी द्वीप सागर।
पूर्व-पूर्व को अगले वाले, रहते वेष्टित कर॥
चूड़ी या वलयाकारी वे, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्वीपसमुद्र-स्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

तन्मध्ये मेरु-नाभि-वृत्तो योजन-शत-सहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः।

उनके मध्य गोल थाली सा, इक लख योजन का।
जम्बूद्वीप है जिसमें मेरु, नाभि समान रहा॥
मोक्षशास्त्र में जम्बूद्वीप को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-मेरु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्य-वतैरा-वत-वर्षाः क्षेत्राणि।

जम्बूद्वीप में भरत हैमवत, हरि विदेह रम्यक।
हैरण्यवत वा ऐरावत ये, रहे क्षेत्र वर्षक॥
मोक्षशास्त्र में सात क्षेत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-सप्तक्षेत्र निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

तद्-विभाजिनः पूर्वा-परायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः।

उन्हें बाँटती पूरब पश्चिम, छह श्रेणी लंबी।
हिमवत और महा हिमवत फिर, निषध नील रुक्मी॥
शिखरी पर्वत आदि वर्षधर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-सप्तक्षेत्र-पर्वत निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः।

क्रमशः उन पर्वत के रंग हो, सोना चाँदी सम।
तपे स्वर्ण वैडूर्यमणि सम, चाँदी सोना सम॥
मोक्षशास्त्र में रंग कुलाचल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-सप्तक्षेत्र-पर्वतरंग निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरि मूले च तुल्य-विस्ताराः।

ये गिरि ऊपर मध्य मूल में, सम विस्तार रहे।
विध-विध मणियाँ खचित पार्श्व जो, चित्र विचित्र रहे॥
मोक्षशास्त्र में अचल रूप को, उमास्वामी कहते।

अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-सप्तक्षेत्र-पर्वतविस्तार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका-ह्रदास्-तेषा-मुपरि।

पद्म महापद्म तिगिञ्छ वा, केसरि महा पुण्डरीक।
पुण्डरीक क्रमशः उन अचलों, पर हों छह ह्रद ठीक॥
मोक्षशास्त्र में अचल सरोवर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-सप्तक्षेत्र-पर्वतह्रद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

प्रथमो योजन-सहस्रायामस्-तदर्ध विष्कम्भो ह्रदः।

प्रथम सरोवर इक हजार तक, योजन लंबा हो।
इससे अर्ध पाँच सौ योजन, तक तो चौड़ा हो॥
मोक्षशास्त्र में प्रथम सरोवर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमह्रद-स्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

दश-योजना-वगाहः।

पद्मनाम का प्रथम सरोवर, दस योजन गहरा।
हीरे का तल स्वर्णमणि तट, पूरा स्वच्छ भरा॥
मोक्षशास्त्र में गहराई को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमह्रद-गहराई निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

तन्मध्ये योजनं पुष्करम्।

पद्म सरोवर के केन्द्रक में, एक कमल प्यारा।
रहा एक योजन विस्तारी, लगे बड़ा न्यारा॥
मोक्षशास्त्र में कमल क्षेत्रफल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमह्रद-पुष्कर निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

तद्-द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च।

पद्म सरोवर के आगे जो, कमल सरोवर हों।

दुगुने-दुगुने होते जाते, क्रम-क्रम से दोनों॥
मोक्षशास्त्र में कमल सरोवर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्यह्रद-पुष्करस्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

तन्-निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्यो-पमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः।

वहाँ रहें श्री ह्री धृति कीर्ति, बुद्धि वा लक्ष्मी।
सामानिक परिषद देवों के, साथ रहें देवीं॥
एक पल्य की आयु वाली, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करस्थित-षट्देवी निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

गङ्गा-सिन्धु-रोहि-द्रोहि-तास्या-हरिद्-धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता-सुवर्ण-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितस्-तन्मध्यगाः।

गंगा सिंधु रोहित रोहितास्या, हरित् - हरिकान्ता।
बहती हैं सीता-सीतोदा, नारी - नरकान्ता॥
सुवर्णकूला व रूप्यकूला, रक्ता - रक्तोदा।
भरत आदि उन क्षेत्रों के ये, क्रमिक नदी जोड़ा॥
मोक्षशास्त्र में नदी नाम को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-नदीनाम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

द्वयो-र्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः।

उन दोनों नदियों में से जो, हो पहली-पहली।
वे नदियाँ तो पूर्व दिशा के, सागर ओर चली॥
मोक्षशास्त्र में नदियों के क्रम, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-प्रथमनदी-प्रवाहक्रम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

शेषास्-त्वपरगाः।

उन नदियों के जोड़ों में जो, शेष नदी रहतीं।
वे नदियाँ पश्चिम सागर में, जा करके मिलतीं॥

मोक्षशास्त्र में शेष नदी को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-शेषनदी-प्रवाहक्रम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः।

गंगा सिंधु आदि नदियों की, नदी सहायक जो।
चौदह चौदह हजार नदियाँ, आगे दुगुनी हो॥
मोक्षशास्त्र में कुल नदियों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जम्बूद्वीप-सहायकनदी-प्रवाहक्रम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजन-शत-विस्तारः षट्चैकोन-विंशति-भागा योजनस्य।

पाँच शतक छब्बीस सही छह, बटे रहे उन्नीस।
भरत क्षेत्र का योजन में है, यह विस्तार सटीक॥
मोक्षशास्त्र में भरत क्षेत्रफल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भरतक्षेत्र-विस्तार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-वर्षा विदेहान्ताः।

अब विदेह तक गिरि क्षेत्रों का, जो विस्तार रहा।
भरतक्षेत्र से दुगुना-दुगुना, योजन रूप कहा॥
मोक्षशास्त्र में भरत क्षेत्रफल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्यक्षेत्र-विस्तार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

उत्तरा दक्षिण तुल्याः।

उत्तर के गिरि क्षेत्रों के जो, ये विस्तार कहे।
उन सम दक्षिण गिरि क्षेत्रों के, भी विस्तार रहे॥
मोक्षशास्त्र में सभी क्षेत्रफल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तुल्यक्षेत्र-विस्तार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

भरतै-रावतयो-र्वृद्धि-ह्रासौ-षट्समयाभ्या-मुत्सर्पिण-यवसर्पिणीभ्याम्।

क्षेत्र भरत ऐरावत में षट्-, समय चक्र होता।
उत्सर्पिणी अवसर्पणी द्वारा, वृद्धि ह्रास होता॥
मोक्षशास्त्र में काल चक्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भरत-ऐरावतक्षेत्र-कालचक्र निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

ताभ्या-मपरा भूमयोऽवस्थिताः।

क्षेत्र भरत ऐरावत के बिन, शेष भूमियाँ जो।
सभी अवस्थित वो रहती हैं, वृद्धि ह्रास न हो॥
मोक्षशास्त्र में क्षेत्र व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अवस्थितक्षेत्र निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैव-कुरवकाः।

क्षेत्र हेमवत हरिवर्ष व, देवकुरु की जो।
नर आयु वो क्रमिक एक दो, तीन पल्य की हो॥
मोक्षशास्त्र में पल्य आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्यक्षेत्र-पल्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

तथोत्तराः।

दक्षिण दिशि वाले क्षेत्रों में, कही व्यवस्था जो।
उत्तर दिशि वाले क्षेत्रों में, वही व्यवस्था हो॥
मोक्षशास्त्र में क्षेत्र व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्यक्षेत्र-व्यवस्था निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

विदेहेषु संख्येय-कालाः।

विदेह क्षेत्रों में संख्यातों, वर्ष आयु वाले।
मनुष्य रहें चतुर्थ काल सम, क्रिया धर्म वाले॥
मोक्षशास्त्र में विदेह स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्र-आयु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः।

भाग एक सौ नब्वे वाँ जो, जम्बूद्वीप का हो।
वह विस्तार अन्य प्रकार से, भरत क्षेत्र का हो॥
मोक्षशास्त्र में अन्य विधि को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भरतक्षेत्र-अन्यविधिविस्तार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

द्विर्धातकी-खण्डे।

रहे धातकीखण्ड क्षेत्र में, गिरि पर्वत आदि।
जम्बूद्वीप से दुगुने होते, सभी क्षेत्र आदि॥
मोक्षशास्त्र में विस्तारों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री धातकीखण्ड निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

पुष्करार्द्धे च।

जितने गिरि पर्वत रहते हैं, क्षेत्र धातकी में।
उतने गिरि पर्वत रहते हैं, आधे पुष्कर में॥
मोक्षशास्त्र में पुष्करार्द्ध, को उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्करार्द्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३४॥

प्राङ्-मानुषोत्तरान्-मनुष्याः।

मानुषोत्तर गिरि पर्वत के, पूर्व-पूर्व तक ही।
मनुष्य पाए जाते केवल, आगे कहीं नहीं॥
मोक्षशास्त्र में मानुषोत्तर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्यक्षेत्र निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३५॥

आर्या-म्लेच्छाश्च।

ढाई द्वीप में दो प्रकार के, मनुष्य होते हैं।
पहले गुणी आर्य हों दूजें, म्लेच्छ होते हैं॥
मोक्षशास्त्र में मनुज भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आर्य-म्लेच्छ निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३६॥

भरतै-रावत-विदेहा: कर्म-भूमयोऽन्यत्र देव-कुरूत्तर-कुरुभ्य:।

देवकुरु व उत्तरकुरु को, छोड़ भूमियाँ जो।
भरत ऐरावत विदेह ये सब, कर्म भूमियाँ हों॥
मोक्षशास्त्र में कर्मभूमियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री कर्मभूमि निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३७॥

नृस्थिती परावरे त्रिपल्यो-पमान्त-र्मुहूर्ते।

मनुष्यों की उत्कृष्ट आयु तो, तीन पल्य होती।
और मात्र अंतर्मुहूर्त ही, जघन्यायु होती॥
मोक्षशास्त्र में मनुष्य आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्य-उत्कृष्ट-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३८॥

तिर्यग्योनि-जानां च।

जो उत्कृष्ट जघन्य आयु तो, मनुष्यों की होती।
उसी तरह से तिर्यंचों की, आयु भी होती॥
मोक्षशास्त्र तिर्यंच आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंच-उत्कृष्ट-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३९॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

नर नारकी तो सब बनें पर, कौन नारायण बनें।
शुद्धात्म के सिद्धांत में जो, भक्त पारायण बनें॥
तीजे सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले परमात्म बनने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ तीजा अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, मिले शुद्ध पर्याय॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र तृतीय अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

तीजा यह अध्याय दे, दुनियाँ की हर चीज।
जिससे भव भटकन मिटे, मिले लोक का शीश॥

मिले लोक का शीश सो, छूटेगा संसार।
आतम में होगा रमण, होगी जय-जयकार॥

(ज्ञानोदय)

यूँ तो अपनी भव यात्रा का, इस दुनिया में अंत नहीं।
फिर भी कुछ भी याद नहीं है, व्यथा कथा का ग्रन्थ नहीं॥
भोग रहे हैं काट रहे हैं, अपनी दुखद कहानी को।
जिसका कहना रहा असम्भव, अनन्त केवलज्ञानी को॥१॥
क्या अभ्यस्त हो गयी चेतना, या हो चुकी पराजित है।
क्यों बचने का करे न उद्यम, या फिर मिला नहीं पथ है॥
नहीं-नहीं दुख इष्ट न हमको, फिर भी कुछ ना सूझ रहा।
आप बताओ क्या करना अब, भक्त आपसे पूछ रहा॥२॥
यदि विश्वास आपको है तो, जिनशासन को ग्रहण करो।
पढ़ो सुनो तत्त्वार्थसूत्र को, लोक भ्रमण का हरण करो॥
यह अध्याय तीसरा सचमुच, सम्यक् राह दिखा देगा।
नरक आदि दुर्गतियों वाले, दुख से हमें बचा लेगा॥३॥
भोगभूमि की भोग कथा का, हमसे मोह छुड़ा देगा।
स्वर्गों वाले सम्मोहन से, सचमुच हमें बचा लेगा॥
इन्द्र चक्रवर्ती के पद भी, हमें लुभा ना पाएंगे।
निज के सुख पर हम रीझेंगे, भव के भ्रमण नशाएंगे॥४॥
पंच परावर्तन की पीड़ा, फिर न मिलेगी आतम को।
यही उमास्वामी जी कहते, अब तो प्यारे आ धमको॥
यही शीघ्र कल्याण करेगा, पुण्यवान धनवान करे।
हरे अविद्या विद्या देकर, 'सुव्रत' को भगवान करे॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र तृतीय अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह तीजा अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

चतुर्थ अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

देवाश्-चतुर्णिकायाः।

देव स्वर्ग के चार निकायों, वाले ही होते।
भवनवासी व्यंतर ज्योतिष वा, वैमानिक होते॥
मोक्षशास्त्र में सुरासुरों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वलोक-देवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

आदितस्-त्रिषु पीतान्त-लेश्याः।

पहले तीन निकायों में तो, रही चार लेश्या।
अपर्याप्त में कृष्ण नील कापोत, पीत लेश्या॥
पर्याप्तक में मात्र पीत को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवलेश्या निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाः कल्पोप-पन्न-पर्यन्ताः।

दस प्रकार के भवनवासी हों, व्यंतर आठ प्रकार।
ज्योतिष पाँच तथा वैमानिक, बारह रहे प्रकार॥
कल्पों तक की देव व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवभेद सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्म-रक्ष-लोकपाला-नीक-

प्रकीर्णका-भियोग्य-किल्विषि-काश्चैकशः।

इन्द्र सामानिक त्रायस्त्रिंश वा, पारिषद आत्मरक्ष।
लोकपाल अनीक प्रकीर्णक, आभियोग्य किल्विषिक॥
मोक्षशास्त्र में देव भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवसामान्यभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

त्रायस्-त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः।

त्रायस्त्रिंश व लोकपाल ये, देव भेद दोनों।
व्यंतर ज्योतिष में ना रहते, मात्र आठ जानो॥
मोक्षशास्त्र में विशेषता को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवविशेषभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

पूर्वयो-र्द्वीन्द्राः।

चउ निकाय में पहले के दो, देव निकाय रहे।
भवनवासि व्यंतर उनमें तो, दो-दो इन्द्र कहे॥
मोक्षशास्त्र में इन्द्र व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देव-इन्द्रव्यवस्था निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

काय-प्रवीचारा आ ऐशानात्।

भवनत्रिक ईशान तलक के, देव देवियाँ जो।
भोग भोगते काया से ज्यों, नर नारी का हो॥
मोक्षशास्त्र में प्रवीचार को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवकाय-प्रवीचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः प्रवीचाराः।

स्पर्श से सानत माहेन्द्र तक, आठ तलक लख भोग।
सहस्रार तक शब्दों द्वारा, सोलह तक मन भोग॥
शेष देव के प्रवीचार यों, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देव-अन्यप्रवीचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

परेऽप्रवीचाराः।

इनसे उच्च शेष देवों में, नहीं काम सुख हो।
प्रवीचार का अभाव उनमें, चखें परम सुख वो॥
मोक्षशास्त्र में देव सुखों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देव-अप्रवीचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

भवन-वासिनोऽसुरनाग-विद्युत्सुपर्णाग्नि-वातस्तनितोदधि-द्वीप दिक्कुमाराः।

असुर नाग विद्युत सुवर्ण वा, अग्नि-वातकुमार।
स्तनित कुमार उदधि द्वीप दिक्, ये सब रहे कुमार॥
भवनवासी के दस प्रकार ये, उमास्वामी कहते है।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भवनवासिदेव-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः।

हैं किन्नर किम्पुरुष महोरग, गन्धर्व यक्ष राक्षस।
भूत पिशाच आठ प्रकार के, ये व्यंतर है बस॥
मोक्षशास्त्र में व्यंतर सुर को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंतरदेव-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्र-मसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तार-काश्च।

पाँच तरह के देव ज्योतिषी, सूर्य चंद्रमा हों।
ग्रह नक्षत्र प्रकीर्णक तारे, ज्योतिर्मय पाँचों॥
मोक्षशास्त्र में भेद ज्योतिषी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषीदेव-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके।

ज्योतिष देव मनुष्य लोक में, मेरु पर्वत की।
प्रदक्षिणा कर ढाईद्वीप में, गमन शील नित ही॥
मोक्षशास्त्र में ज्योतिष गति को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषीदेवगति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

तत्कृतः काल-विभागः।

गमन शील ज्योतिष देवों के, गमन समय द्वारा।
हो व्यवहार काल का निर्णय, पल छिन घड़ि द्वारा॥
मोक्षशास्त्र में काल व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री कालभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

बहि-रवस्थिताः।

ज्योतिष देव मनुष्य लोक के, जो बाहर रहते।
वे सब स्थिर ही रहते हैं, यही सूत्र कहते॥
मोक्षशास्त्र में स्थित ज्योतिषी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री स्थिरज्योतिषीदेव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

वैमानिकाः।

चौथे निकाय के देवों को, वैमानिक कहते।
विमान में रहने से इनको, वैमानिक कहते॥
मोक्षशास्त्र में वैमानिक सुर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिकदेव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

कल्पोप-पन्नाः कल्पा-तीताश्च।

वैमानिक सुर दो प्रकार के, पहले कल्पोपपन्न।
कल्पातीत दूसरे जानो, कल्प परे लें जन्म॥
मोक्षशास्त्र में पुण्यदेव को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिकदेवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

उपर्युपरि।

सोलह स्वर्ग नवों ग्रैवेयक, नव अनुदिश जो हों।
पंच अनुत्तर ऊपर - ऊपर, वैमानिक वो हों॥
मोक्षशास्त्र में विमान स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विमानस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्त्रा-रेष्वानत-प्राणतयो-रारणा-च्युतयो र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्ता-परा-जितेषु सर्वार्थ-सिद्धौ च।

सौधर्म ईशान सानत माहेन्द्र, ब्रह्म ब्रह्म-उत्तर।
लान्तव-कापिष्ठ शुक्र महाशुक्र, शतार व सहस्त्रार॥
आनत-प्रानत आरण-अच्युत, फिर नवग्रैवेयिक।
विजय- वैजयन्त जयन्त अपराजित, सर्वार्थसिद्धि तक॥
मोक्षशास्त्र में विमान वास को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विमानवास निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्-धीन्द्रिया-वधि-विषयतोऽधिकाः।

स्थिति प्रभाव सुखद्युति लेश्या- विशुद्धि इन्द्रि विषय।
अवधि विषय से उच्च सुरों के, होते अधिक विषय।
मोक्षशास्त्र में अधिक विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिकाधिक-विषय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

गति-शरीर-परिग्रहाभि-मानतो हीनाः।

गति शरीर परिग्रह मान के, जो भी विषय रहे।
ऊपर-ऊपर के देवों में, क्रमशः हीन कहे॥
मोक्षशास्त्र में हीन विषय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिकहीन-विषय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि शेषेषु।

पहले दो युगलों में लेश्या, पीत बताई है।
पद्म तीन में शुक्ल शेष में, क्रमशः गाई है॥
मोक्षशास्त्र में विमान लेश्या, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिकदेव-लेश्या निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

प्राग-ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।

ग्रैवेयकों के पहले-पहले, जो विमान होते।
वो सब कल्प कहे जाते जो, जोड़े सम होते॥
मोक्षशास्त्र में कल्प नाम को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैमानिकदेव-कल्पसंज्ञा निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

ब्रह्म-लोकालया लौकांतिकाः।

लौकान्तिक देवों के आलय, ब्रह्म लोक रहते।
ब्रह्म स्वर्ग के अंत भाग में, देव ऋषि रहते॥
मोक्षशास्त्र में लौकान्तिक को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लौकान्तिकदेव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

सारस्वता-दित्य-वह्न्य-रुण-गर्दतोय-तुषि-ताव्या-बाधा-रिष्टाश्च।

सारस्वत आदित्य वह्नि वा, अरुण वा गर्दतोय।
तुषित अव्याबाध अरिष्ट ये, सब मिल आठों होय॥
आठ तरह के लौकान्तिक को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लौकान्तिकदेव-नाम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

विजयादिषु द्विचरमाः।

चार अनुत्तर विजय आदि में, जो अहमिन्द्र रहे।
वो दो चरम मनुष्य भवों के, धारण योग्य कहे॥
मोक्षशास्त्र में द्वि-चरमों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्विचरमदेव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

औप-पादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्-तिर्यग-योनयः।

मनुष्य वा उपपाद जन्म के, देव नारकी जीव।
उन्हें छोड़ तिर्यंच योनि के, शेष रहे सब जीव॥
मोक्षशास्त्र में तिर्यंचों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचजीव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

स्थिति-रसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्यो-पमार्द्ध-हीन-मिताः।

असुर नाग सुपर्ण द्वीप वा, शेष भवनवासी।
क्रमशः एक तीन ढाई दो, डेढ़ पल्य राशी॥
यों उत्कृष्ट आयु पाते हैं, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भवनवासिदेव-आयु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

सौधर्मैशानयोः सागरोपमे-अधिके।

सौधर्म ईशान कल्प स्वर्ग में, देवों की आयु।
दो सागर से अधिक रहे कुछ, यह उत्कृष्ट आयु॥
मोक्षशास्त्र में आयु कथन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सौधर्म-ईशानदेव-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त।

सानत माहेंद्र कल्प स्वर्ग में, देवों की आयु।
सात सागरोपम से ज्यादा, ये उत्कृष्ट आयु॥
मोक्षशास्त्र में उच्च आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सानत-माहेंद्रदेव-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

त्रि-सप्त-नवैका-दश-त्रयोदश-पञ्चदशभि-रधिकानि तु।

ब्रह्म ब्रह्मोत्तर में दस लान्तव, कापिष्ठ में चौदह।
शुक्र महाशुक्र में सोलह सतार, सहस्त्रार में अठरह॥
ये तो साधिक आगे आनत-प्राणत की हो बीस।
उत्कृष्ट आयु आरण अच्युत, की सागर बाईस॥
मोक्षशास्त्र में उत्कृष्ट आयु, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शेषकल्पदेव-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

आरणा-च्युता-दूर्ध्व-मेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च।

अच्युत से इक ज्यादा पहले, ग्रैवेयक तेईस।
इक-इक ज्यादा इकत्तीस तक, अनुदिश में बत्तीस॥
पंच अनुत्तर में तेंतीस हो, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री कल्पातीतदेव-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

अपरा पल्योपम-मधिकम्।

सौधर्म ईशान कल्प स्वर्ग में, जघन्य आयु तो।
एक पल्य से अधिक मिले कुछ, देव देवियों को॥
मोक्षशास्त्र में जघन्य आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सौधर्म-ईशानदेव-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

परतःपरतः पूर्वा-पूर्वा-नन्तरा।

आगे-आगे पूर्व-पूर्व की, जो उत्कृष्ट आयु।
उससे एक समय ज्यादा हो, यह जघन्य आयु॥
मोक्षशास्त्र में आयु व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शेषकल्पदेव-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३४॥

नारकाणां च द्विती-यादिषु।

प्रथम नरक की उत्कृष्ट आयु, से इक समय अधिक।
दूजी की जघन्य आयु हो, इस विध आगे तक॥
मोक्षशास्त्र में नरक आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरक-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३५॥

दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम्।

प्रथम नरक के नारकियों की, जघन्य आयु जो।
कम से कम दस हजार वर्षों, की बतलाई वो॥
प्रथम नरक की जघन्य आयु, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमनरक-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३६॥

भवनेषु च।

भवनवासियों के देवों की, अब सुन लो आयु।
कम से कम दस हजार वर्षों, की जघन्य आयु॥
भवनवासी की जघन्य आयु, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भवनवासि-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३७॥

व्यन्तराणां च।

व्यंतर देवों की भी इतनी, होती है आयु।
कम से कम दस हजार वर्षों, की जघन्य आयु॥
व्यंतर सुर की जघन्य आयु, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंतर-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३८॥

परा पल्योपम-मधिकम्।

व्यंतर देवों की अब सुन लो, क्या होती आयु।
एक पल्य से अधिक रही कुछ, वह उत्कृष्ट आयु॥
व्यंतर सुर की उत्कृष्ट आयु, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्यंतर-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३९॥

ज्योतिष्काणां च।

ज्योतिष सुर-सुरियों की आयु, जो उत्कृष्ट रही।
एक पल्य से अधिक रही कुछ, ये है सूत्र कही॥
ज्योतिष की उत्कृष्ट आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिष-उत्कृष्टायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४०॥

तदष्ट-भागोऽपरा।

ज्योतिष की उत्कृष्ट आयु का, भाग आठवाँ जो।
भाग आठवां एक पल्य का, जघन्य आयु हो॥
ज्योतिष की जघन्य आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिष-जघन्यायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४१॥

लौकान्तिका-नामष्टौ सागरो-पमाणि सर्वेषाम्।

सब लौकान्तिक की आयु हो, आठ सागरोपम।
पाँच हाथ ऊँचाई लेश्या, शुक्ल रही उत्तम॥
लौकान्तिक देवों की आयु, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लौकान्तिकायु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४२॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

जड़ भोग हैं जग में सुलभ, जिसमें फँसा यह विश्व है।
ये त्याग कर निज भोग पाना, चाहता हर शिष्य है॥
चौथे सभी अध्याय सूत्रों, के चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य लें निज भोग पाने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ चौथा अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, मिलें भोग सुखदाय।

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र चतुर्थ अध्याय पूर्णार्घ्यं...॥

जयमाला

(दोहा)

चौथा यह अध्याय दे, भोग रहित निज भोग।
अतः त्याग जड़ भोग को, करलें निज का भोग॥
कर लें निज का भोग सो, होंगे दुख ना रोग।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, सभी सुखद संयोग॥

(ज्ञानोदय)

इस संसार अवस्था में तो, सर्वोत्तम गति देव रही।
भोगी और विलासी जन को, वरद भूमि स्वयमेव रही॥
सभी विश्व मत मात्र इसी के, ज्ञान करें पहचान करें।
स्वर्ग भूमियाँ भोग भूमियाँ, धर्म कहें सम्मान करें॥१॥
आतम के अनमोल खजाने, यहीं रिक्त कर जाते हैं।
भोगी रोगी दरिद्र होकर, भव-भव में पछताते हैं॥
किन्तु जिन्हें भव भोग न रुचते, सच की खोज करेंगे वो।
श्री तत्त्वार्थसूत्र का अध्ययन, सचमुच रोज करेंगे वो॥२॥

यह चौथा अध्याय सही में, सब व्यामोह मिटा देगा।
पर से श्रेष्ठ आत्म वैभव है, सम्यग्ज्ञान करा देगा॥
स्वर्गों के अवतार मात्र जो, धर्म समझकर विस्मित हों।
यदि निज वैभव वे चख लें तो, कभी न जग में विचलित हों॥३॥
भोग इन्द्र अहमिन्द्रों वाले, कभी न चाहें सपने में।
श्री तत्त्वार्थसूत्र के द्वारा, रमण करेंगे अपने में॥
जिससे रोग भोग बीमारी, व्यसन पाप अज्ञान नशें।
भ्रम के चक्रव्यूह से बचकर, अपने आतम नगर वसें॥४॥
फिर अवतारवाद का हर सच, स्वयं सामने पाओगे।
चमत्कार में रुचि न रहेगी, चमत्कार हो जाओगे॥
निज कि यह संपन्न दशा ही, सर्वोत्तम सुख पूँजी है।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' की, अतः नमोऽस्तु गूँजी है॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र चतुर्थ अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह चौथा अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

पंचम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

अजीव-काया-धर्मा-धर्मा-काश-पुद्गलाः।

धर्म अधर्म आकाश और जो, सब पुद्गल होते।
सभी अजीवकाय कहलाते, जीव रहित होते॥
मोक्षशास्त्र में अजीव काय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अजीव-तत्त्व निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

द्रव्याणि।

धर्म अधर्म आकाश और भी, पुद्गल अजीव जो।
वो सब द्रव्य कहे जाते हैं, सूत्र अर्थ यह हो॥
मोक्षशास्त्र में द्रव्य कथन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अजीव-द्रव्य निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

जीवाश्च।

इन द्रव्यों के साथ-साथ में, सबसे भिन्न रहे।
अतः जीव भी द्रव्य रूप है, यह सिद्धांत कहे॥
मोक्षशास्त्र में जीव द्रव्य को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीव-द्रव्य निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

नित्या-वस्थितान्यरूपाणि।

उक्त द्रव्य सब नित्य अवस्थित, और अरूपी हैं।
इन्हीं गुणों से समझो किस विध, कौन स्वरूपी हैं॥
मोक्षशास्त्र में द्रव्य रूप को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य-स्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

रूपिणः पुद्गलाः।

किन्तु सभी पुद्गल रूपी हों, इसे समझ लेना।
द्रव्यों का अपवाद सूत्र यह, त्याग नहीं देना॥
मोक्षशास्त्र में रूपी पुद्गल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री रूपी-पुदगलद्रव्य निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

आ आकाशा-देक-द्रव्याणि।

इस आकाश द्रव्य तक तीनों, इक-इक द्रव्य रहे।
इक-इक धर्म अधर्म और इक, ही आकाश रहे॥
मोक्षशास्त्र में एक द्रव्य को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य-संख्या निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

निष्क्रियाणि च।

एक-एक जो द्रव्य रहे वे, सब निष्क्रिय रहते।
मतलब कभी क्रिया न करते, जिनवर यह कहते॥
मोक्षशास्त्र में निष्क्रियता को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निष्क्रिय-द्रव्य निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

असंख्येयाः प्रदेशा धर्मा-धर्मैक-जीवानाम्।

धर्म-अधर्म व एक जीव के, हों प्रदेश कितने।
जितने असंख्यात प्रदेश हों, हों प्रदेश उतने॥
मोक्षशास्त्र में प्रदेश गणना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रदेश-गणना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८।

आकाशस्या-नन्ताः।

लेकिन इस आकाश द्रव्य के, अनन्त प्रदेश हों।
जिनका अंत कभी ना होता, ऐसे अनन्त हों॥
मोक्षशास्त्र में नभ प्रदेश को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आकाशप्रदेश-गणना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

संख्येया-संख्येयाश्च पुद्गलानाम्।

पुद्गल के संख्यात साथ में, असंख्यात भी हों।
अनन्त अनन्तानन्त प्रदेश, अणुस्कन्ध भी हों॥
मोक्षशास्त्र में प्रदेश पुद्गल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-प्रदेश निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

नाणोः।

दो या दो से अधिक अधिकतर, बहु प्रदेश नहीं।
एक प्रदेशी अणु होते हैं, आगम कथन यही॥
मोक्षशास्त्र में अणु प्रदेश को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-अणुप्रदेश निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

लोका-काशेऽवगाहः।

धर्म आदि इन सब द्रव्यों का, है स्थान कहाँ।
लोकाकाश द्रव्य ही सबको, दे अवगाह सदा॥
मोक्षशास्त्र में द्रव्य वास को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लोकाकाश निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

धर्मा-धर्मयोः कृत्स्ने।

धर्म अधर्म द्रव्य का होता, कहो कहाँ स्थान।
लोकाकाश पूर्ण में होता, तिल में तेल समान॥
मोक्षशास्त्र में अवगाहों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्म-अधर्मद्रव्य निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

एक-प्रदेशा-दिषु भाज्यः पुद्गलानाम्।

पुद्गल के अवगाह लोक के, इक प्रदेश लेकर।
लोकाकाश पूर्ण में होते, अणुस्कन्ध होकर॥
मोक्षशास्त्र में पुद्गल वास को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-वास निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

असंख्येय-भागादिषु जीवानाम्।

लोकाकाश द्रव्य में होते, जीवों के अवगाह।
असंख्यात आदि से लेकर, पूरण लोक समाय॥
मोक्षशास्त्र में जीव वास को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीव-वास निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्।

दीप समान जीव द्रव्यों में, संकोचन विस्तार।
गुण होने से पूर्ण लोक में, भी कर ले अवगाह॥
मोक्षशास्त्र में जीव गुणों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीव-अवगाह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

गति-स्थित्यु-पग्रहौ धर्मा-धर्मयो-रुपकारः।

चलने में दे धर्म सहारा, यही धर्म उपकार।
रुकने में अधर्म निमित्त हो, ये अधर्म उपकार॥
धर्म अधर्म उपकार सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्म-अधर्म-उपकार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

आकाशस्या-वगाहः।

जो अवगाह सभी को देता, वह आकाश रहा।
यह अवगाह दान ही नभ का, शुभ उपकार रहा॥
आकाश के उपकार सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आकाश-उपकार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

शरीर-वाङ्मनः प्राणा-पानाः पुद्गलानाम्।

मनोवचन वा काय और जो, प्राणापान रहा।
ये उपकार पुद्गलों के हैं, ऐसा भाव कहा॥
पुद्गल के उपकार सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-उपकार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

सुख-दुःख-जीवित-मरणो-पग्रहाश्च।

सुख दुख हो या जन्म मरण हो, इन सब को भी तो।
पुद्गल के उपकार समझना, इतना तो सीखो॥
पुद्गल के उपकार अन्य भी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्यपुद्गल-उपकार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

परस्परो-पग्रहो जीवानाम्।

इक दूजे के निमित्त बनना, सदा परस्पर में।
जीवों के उपकार यही हैं, श्री जिनशासन में॥
जीवों के उपकार सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीव-उपकार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्वा-परत्वे च कालस्य।

द्रव्यों की जो रही वर्तना, जो परिणाम रहे।
क्रिया परत्व अपरत्व काल के, ये उपकार कहे॥
कालों के उपकार सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री काल-उपकार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः।

पुद्गल हों स्पर्श गन्ध रस, तथा वर्ण वाले।
संख्य असंख्य अनन्त भेद भी, पुद्गल अपना ले॥
पुद्गल के विशेष लक्षण को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छाया-तपोद्योत-वन्तश्च।

शब्द बन्ध सूक्ष्मत्व स्थूलता, संस्थान छाया।
अन्धकार आतप उद्योत ये, पुद्गल पर्याया॥
पुद्गल के पर्याय सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-पर्याय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

अणवः स्कन्धाश्च।

पुद्गल के दो भेद रहे हैं, अणु और स्कन्ध।
अणु रहता है सूक्ष्म रूप में, स्थूल रूप स्कन्ध॥
मोक्षशास्त्र में पुद्गल विध को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुद्गल-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

भेद-संघातेभ्यः उत्पद्यन्ते।

भेद रूप संघात रूप से, और भेद-संघात।
यों स्कन्ध उत्पन्न होते हैं, याद रखो यह बात॥
स्कन्धों के उत्पत्ति सूत्र को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री स्कंध-उत्पत्ति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

भेदा-दणुः।

अणु उत्पन्न भेद से होता, यह भी ज्ञान करें।
इस भौतिक विज्ञान समय में, सम्यग्ज्ञान करें॥
मोक्षशास्त्र में अणु उत्पत्ति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अणु-उत्पत्ति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः।

भेद और संघात रूप से, दिखते हैं स्कन्ध।
चक्षुन्द्रिय के विषय बनें वे, हों स्थूल स्कन्ध॥
मोक्षशास्त्र में चाक्षुष स्कन्ध को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री चाक्षुष-स्कन्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

सद् द्रव्य-लक्षणम्।

सकल द्रव्य का लक्षण सत् है, सत् अस्तित्त्व रहा।
इस बिन कोई द्रव्य न रहता, ये सिद्धान्त कहा॥
मोक्षशास्त्र में द्रव्य-लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्रव्य-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत्।

जो सत् वो उत्पाद तथा व्यय, ध्रौव्य रूप होते।
इन तीनों से सहित सदा ही, सभी द्रव्य होते।
मोक्षशास्त्र में सत्-लक्षण को, उमास्वामी कहते॥
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सत्-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

तद्-भावाव्ययं नित्यम्।

जो जिसका स्वभाव हो उससे, च्युत ना होना वो।
नित्य द्रव्य का गुण कहलाता, नहीं खिलौना हो॥
मोक्षशास्त्र में तद्भावों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तत्-भाव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

अर्पिता-नर्पित-सिद्धेः।

अर्पित और अनर्पित दोनों, लगें विरोधी से।
किन्तु धर्म की श्रेष्ठ सिद्धियाँ, होती इन ही से॥
मोक्षशास्त्र में मुख्य गौण को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मुख्य-गौण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः।

पुद्गल के चिकने रूखे गुण, द्वारा होता बन्ध।
अंतरंग बहिरंग रूप से, होता है अनुबन्ध॥
मोक्षशास्त्र में स्निग्ध रूक्ष गुण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री स्निग्ध-रूक्षगुण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

न जघन्य-गुणानाम्।

जघन्य गुण वाले पुद्गल का, होता बन्ध नहीं।
शक्ति अंश कमजोर रहे तो, हो सम्बन्ध नहीं॥
मोक्षशास्त्र में जघन्य गुण को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जघन्य-गुणबन्धनिषेध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३४॥

गुण-साम्ये सदृशानाम्।

रहे गुणों की समानता तो, तुल्य जातियों का।
बन्ध नहीं होता है भैया, तुल्य शक्तियों का॥
मोक्षशास्त्र में बन्ध कहाँ ना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बन्ध-निषेध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३५॥

द्व्यधिकादि-गुणानां तु।

दो से अधिक आदि गुण यदि हों, तभी बन्ध होता।
शक्ति अंश दो अधिक जहाँ हो, वहीं बन्ध होता॥
मोक्षशास्त्र में बन्ध व्यवस्था, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बन्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३६॥

बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च।

बन्ध समय दो अधिक गुणों का, जो धारी होगा।
वह निजमय परिणमन कराने, वाला ही होगा॥
मोक्षशास्त्र में अधिक गुणों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अधिकगुण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३७॥

गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्।

गुण पर्याय लक्षणों वाले, होते द्रव्य सही।
गुण अन्वयी तथा व्यतिरेकी, है पर्याय वही॥
मोक्षशास्त्र में गुण पर्याएँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री गुण-पर्याय निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३८॥

कालश्च।

तथा काल भी द्रव्य रहा है, लेकिन काय नहीं।
एक प्रदेशी अकाय है सो, व्याख्या अलग कही॥
मोक्षशास्त्र में काल द्रव्य को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री काल-द्रव्य निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३९॥

सोऽनन्त-समयः।

काल अनन्त समय वाला वह, द्रव्य समझना है।
मुख्य काल का निश्चय करने, सूत्र समझना है॥
मोक्षशास्त्र में काल-ज्ञान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री काल-प्रमाण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४०॥

द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः।

सदा द्रव्य में जो रहते पर, खुद गुण रहित रहे।
वो द्रव्यों के गुण कहलाते, ऐसा सूत्र कहे॥
मोक्षशास्त्र में गुण लक्षण को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री गुण-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४१॥

तद्भावः परिणामः।

जो द्रव्यों का स्वभाव होता है, उसका होना ही।
वह परिणाम कहा जाता है, फिर क्यों रोना जी॥
मोक्षशास्त्र में परिणामों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री परिणाम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४२॥

पूर्णार्घ्यं (हरिगीतिका)

विज्ञान के भौतिक समय में, खो रहे सुख शान्तियाँ।
सो धर्म के विज्ञान द्वारा, दूर हों सब भ्रान्तियाँ॥
पंचम सभी अध्याय सूत्रों, के चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले जड़ बन्ध हरने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ पंचम अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, पुद्गल बन्ध नशाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र पंचम अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

यह पंचम अध्याय दे, सब भौतिक विज्ञान।
भ्रम में उलझे जगत को, देता सम्यग्ज्ञान॥
देता सम्यग्ज्ञान सो, मिले भेद विज्ञान।
बन्धन टूटेंगे सभी, भक्त बनें भगवान॥

(ज्ञानोदय)

धर्म बिना विज्ञान अन्ध है, बिन विज्ञान धर्म विकलांग।
ऐसा कहने वालो सुन लो, है सर्वोच्च धर्म साष्टांग॥

है अनादि की परम्परा सो, सम्यक् धर्म उच्च होता।
जिन सिद्धान्त अटल अविनाशी, सो अनुलंघनीय होता॥१॥
पर भौतिक विज्ञान आज के, जो सिद्धान्त विषय होते।
मेरी माँ तो बाँझ रही है, सो स्ववचन बाधित होते॥
अपने मुँह बन मियाँ मिट्ठू सम, बड़बोला विज्ञान रहा।
खुद ही गलत सिद्ध हो जाता, कोरा अनुसंधान रहा॥२॥
परमपिता के तुल्य धर्म है, सबका रक्षक पालक है।
यह विज्ञान धर्म के आगे, मात्र अनाड़ी बालक है॥
सो पंचम अध्याय सूत्र को, अनुष्ठान कर पढ़ो सुनो।
हर मुश्किल का हल यह देगा, जरा ध्यान से इसे गुनो॥३॥
वैज्ञानिकता क्या कहलाती, यह अध्याय बता देगा।
अनुसंधान सफल सब होंगे, सम्यक् क्रिया सिखा देगा॥
भौतिकता विज्ञान विषय की, दौड़ समाप्त जहाँ होती।
अरे! वहाँ से बहुत दूर जा, कुछ धार्मिक हलचल होती॥४॥
जैसे सूर्य तेज के आगे, मोम पंख गल जाता है।
यों विज्ञान, धर्म के आगे, नतमस्तक हो जाता है॥
भौतिक दुनियाँ में चेतन का, अनुसंधान सिखा देगा।
भेद-ज्ञान विज्ञान सीखने, 'सुव्रत' शीश झुका देगा॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र पंचम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह पंचम अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

षष्टम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

काय-वाङ्-मनः-कर्म योगः।

काय वचन मन के कर्मों को, योग कहा जाता।
जीव प्रदेश परिस्पंदन को, कर्म कहा जाता॥
मोक्षशास्त्र में तीन योग को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री योग निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

स आस्रवः।

काय वचन मन के योगों को, ही आस्रव जानो।
कारण को ही कार्य समझकर, इसे न्याय मानो॥
मोक्षशास्त्र में आस्रव लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आस्रव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

शुभः पुण्यस्या-शुभः पापस्य।

शुभ-शुभ योग पुण्य आस्रव जो, आतम शुद्ध करें।
अशुभ योग पापास्रव हैं जो, शुभ से दूर करें॥
मोक्षशास्त्र में शुभाशुभास्रव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शुभाशुभास्रवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

सकषाया-कषाययोः साम्परायि-केर्या-पथयोः।

जो कषाय सहित आस्रव वो, साम्परायिक हो।
जो कषाय रहित आस्रव है, वो ईर्यापथ हो॥

मोक्षशास्त्र में दो आस्रव को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आस्रवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

इन्द्रिय-कषाया-व्रतक्रियाः पञ्च चतुः पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः।

पाँच इन्द्रियाँ चार कषाएँ, अव्रत पाँच तथा।
कुल पच्चीस क्रिया साम्परायिक, आस्रव भेद कथा॥
मोक्षशास्त्र में साम्परायिक, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री साम्परायिक-आस्रवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

तीव्र-मन्द-ज्ञाता-ज्ञात-भावाधिकरण-वीर्य-विशे-षेभ्यस्-तद्-विशेषः।

तीव्र मन्द अज्ञात ज्ञात इन, भावों के द्वारा।
अधिकरण वा वीर्य शक्ति इन, भेदों के द्वारा॥
आस्रव में विशेषता होती, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आस्रवविशेषहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

अधिकरणं जीवा-जीवाः।

दो प्रकार का अधिकरण यह, आस्रव का होता।
प्रथम जीव अजीव हो दूजा, जो स्वरूप खोता॥
मोक्षशास्त्र में अधिकरण को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अधिकरणभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

आद्यं संरम्भ-समा-रम्भा-रम्भ-योग-कृत-कारितानु-मत-कषाय-विशेषैस्-त्रिस्-त्रिस्-त्रिश्-चतुश्-चैकशः।

त्रि सम्रम्भ समारम्भ आरम्भ, योग मनो वच काय।
कृत कारित अनुमोदन तीनों, मिलकर चार कषाय॥
इक सौ अठ जीवाधिकरण ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जीवाधिकरणभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतुर्द्वि-त्रि-भेदाः परम्।

दो विध निर्वर्तना चार विध, का निक्षेप कहा।
दो संयोग निसर्ग तीन विध, आस्रव रूप कहा॥
यों अजीव अधिकरण भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अजीवाधिकरणभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्-तराया-सादनोप-घाता ज्ञान-दर्शना-वरणयोः।

ज्ञान और दर्शन विषयों में, प्रदोष निह्नव जो।
मात्सर्य अन्तराय आसादन, उपघातों से हो॥
ज्ञान दर्शनावरणी आस्रव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञान-दर्शनावरणीय-आस्रवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

दुःख-शोक-तापा-क्रन्दन-वध-परिदेव-नान्यात्म-परोभय-स्थानान्य-सद्-वेद्यस्य।

अपने पर में विद्यमान दुख, शोक ताप क्रंदन।
बध परिदेवन रहे असाता, वेदनीय साधन॥
मोक्षशास्त्र में अशुभास्त्रव को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अशुभास्त्रवभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

भूत-व्रत्यनु-कम्पा-दान-सराग संयमादियोगः क्षान्तिः शौच-मिति सद्-वेद्यस्य।

भूत व्रती पर अनुकम्पा वा, दान कर्म करना।
सरागसंयम आदि योग वा, शान्ति शौच धरना॥
आस्रव साता वेदनीय के, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सातावेदनीय-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवा-वर्णवादो दर्शनमोहस्य।

धर्म केवली संघ देव श्रुत, इनका अवर्णवाद।

करना दर्शनमोहनीय के, आस्रव की बुनियाद॥
दर्शनमोहनीय के आस्रव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनमोहनीय-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

कषायो-दयात्-तीव्र-परिणामश्-चारित्र-मोहस्य।

कषायोदय में चेतन का जो, तीव्र हुआ परिणाम।
वह चारित्र मोहनीय का, आस्रव समझो नाम॥
चरित मोह का आस्रव कारण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्रमोहनीय-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

बह्वा-रम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्-यायुषः।

बहुत-बहुत आरम्भ पाप कर, बहुत परिग्रह भी।
इसी भाव से नरक आयु का, आस्रव होता जी॥
मोक्षशास्त्र में नरक आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नरकायु-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

माया तै-र्यग्योनस्य।

माया से पशु तिर्यंचों की, आयु का आस्रव।
हो चारित्रमोहनी वाला, देता दुख भव-भव॥
मोक्षशास्त्र में तिर्यंच आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तिर्यंचायु-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

अल्पारम्भ परिग्रहत्वं मानुषस्य।

अल्प अल्प आरम्भ पाप का, अल्प परिग्रह भी।
इसी भाव से मनुष्य आयु का, आस्रव होता जी॥
मोक्षशास्त्र में मनुष्य आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्यायु-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

स्वभाव-मार्दवं च।

अपने स्वभाव की मृदुता का, मार्दव भाव रहा।
उसको भी तो मनुष्य आयु का, आस्रव द्वार कहा॥
मोक्षशास्त्र में स्वभाव मृदुता, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मनुष्यायु-अन्य-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

निः शील-व्रतत्वं च सर्वेषाम्।

शील रहित व्रत रहित भाव जो, धरने वाले हैं।
सभी आयुओं के आस्रव वे, करने वाले हैं॥
मोक्षशास्त्र में सब आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सकलायु-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

सराग-संयम-संयमासंयमा-कामनिर्जरा-बाल-तपांसि दैवस्य।

सरागसंयम संयमासंयम, अकाम निर्जराएँ।
तथा बाल तप देव आयु के, आस्रव कहलाएँ॥
मोक्षशास्त्र में देव आयु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवायु-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

सम्यक्त्वं च।

गुण सम्यक्त्व रहा जो वो भी, देव आयु वाला।
आस्रव कहा गया आगम में, दुख हरने वाला॥
मोक्षशास्त्र में देव आस्रव को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देवायु-अन्य-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

योग-वक्रता विसंवादनं चा-शुभस्य नाम्नः।

योगवक्रता विसंवाद ये, अशुभ नाम वाले।
कर्मास्रव माने जाते हैं, दुख देने वाले॥
मोक्षशास्त्र में अशुभ नाम को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अशुभनामकर्म-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

तद्-विपरीतं शुभस्य।

योग सरलता अविसंवादन, गुण जो पाते हैं।
वो शुभ नाम कर्म के आस्रव, माने जाते हैं॥
मोक्षशास्त्र में शुभ नामास्रव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शुभनाम-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

दर्शन-विशुद्धि-र्विनय-सम्पन्नता शील-व्रतेष्-वनती-चारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्-त्याग-तपसी साधु-समाधि-र्वैयावृत्त्य - करण - मर्हदा-चार्य बहुश्रुत-प्रवचन भक्ति-रावश्यका-परि-हाणि-र्मार्ग-प्रभावना-प्रवचन-वत्सलत्व-मिति तीर्थकरत्वस्य।

दर्शन विनय शील ज्ञानं, संवेग त्याग तप कार्य।
साधु समाधि वैयावृत्ति, अर्हद् भक्ति आचार्य॥
बहुश्रुत प्रवचन आवश्यक वा, प्रभावना वात्सल्य।
ये तीर्थंकर नाम कर्म के, आस्रव करते धन्य॥
मोक्षशास्त्र में सोलहकारण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थंकरप्रकृति-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

परात्म-निन्दा-प्रशंसे स-दसद्-गुणोच्छ-छादनोद्-भावने च नीचै-र्गोत्रस्य।

पर निन्दा व आत्म प्रशंसा, पर सद्गुण ढकना।
अन्य असद्गुण उद्घाटन इन, भावों को करना॥
नीच गोत्र के यह सब आस्रव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नीचगोत्र-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

तद्-विपर्ययो नीचै-र्वृत्त्य-नुत्सेकौ चोत्तरस्य।

अन्य प्रशंसा निज की निन्दा, पर सद्गुण कहना।
अन्य असद्गुण ढके नम्र हो, मान नहीं करना॥
उच्च गोत्र के ये सब आस्रव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री उच्चगोत्र-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

विघ्नकरण-मन्तरायस्य।

दानादिक सत्कार्यों में जो, विघ्न डालना हो।
अन्तराय कर्मों का आस्रव, कहलाता है वो॥
मोक्षशास्त्र में अन्तराय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तराय-आस्रवहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

जो कर्म आस्रव को समझकर, चाहते दुख मुक्ति हो।
वो शुभ करें त्यागें अशुभ सो, शास्त्र देते युक्ति को॥
षष्टम सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले आस्रव नशाने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ षष्टम अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, आस्रव कर्म नशाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र षष्टम अध्याय पूर्णार्घ्यं...॥

जयमाला

(दोहा)

इस छठवें अध्याय से, मिलती सच्ची राह।
अशुभ त्याग शुभ में रमें, सुख से हो निर्वाह॥
सुख से हो निर्वाह तो, बढ़े धर्म श्रद्धान।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, मिले सुखों का दान॥

(ज्ञानोदय)

जो जैसे कर्मों को करते, वैसे ही फल पाएंगे।
अगर नीम बोया होगा तो, आम कहाँ से आएंगे॥
अगर बबूलों को बोया तो, खिलते कहाँ गुलाब कहो।
ये सिद्धांत अगर भूले तो, भव-भव में दुख दर्द सहो॥१॥
प्रायः यही सुना जाता है, दुनियाँ सुख पाना चाहे।
लेकिन सुखदायक कर्मों को, कोई ना करना चाहे॥
दुखद कर्म कर दुख पाते जब, फिर तो भाग्य कोसते हैं।
भगवानों को भी ना छोड़ें, सब पर दोष थोपते हैं॥२॥

इसीलिए सुख शान्ति मिले ना, सो अपराध बोध कर लें।
कर्मों का विज्ञान समझ कर, अब तो आत्म शोध कर लें॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र का छठवाँ, यह अध्याय पाठ कर लें।
जिससे कर्म सुधर जाएंगे, जिन उपदेश ग्रहण कर लें॥३॥
छठा-छठा अध्याय छटा है, ऐसा विद्यागुरु कहते।
इसकी छटा जिसे मिल जाए, हटके छटके वो रहते॥
विश्व शान्ति के योग इसी से, बनने के आसार दिखें।
रोग शोक दुख पाप नशेंगे, 'सुव्रत' एसी आश रखें॥४॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र षष्टम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दे, यह छठवाँ अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

सप्तम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

हिंसा-नृतस्तेया-ब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरति-व्रतम्।

हिंसा असत्य चोरी कुशील, परिग्रह से विरति।
पाँच तरह के व्रत कहलाते, पापों से मुक्ति॥

मोक्षशास्त्र में पाँच व्रतों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पंचव्रत निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

देश-सर्वतोऽणु-महती।

एक देश जो त्याग वही तो, अणुव्रत कहलाते।
सर्व देश जो त्याग वही तो, महाव्रत कहलाते॥
मोक्षशास्त्र में व्रत भेदों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पंचव्रत-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

तत्-स्थै-र्यार्थं भावना: पञ्च पञ्च।

पाँच व्रतों को स्थिर करने, अलग-अलग सबकी।
पाँच-पाँच व्रत कही भावना, कुल पच्चीस हुईं॥
मोक्षशास्त्र में व्रती भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पंचव्रत-भावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

वाङ्मनो-गुप्तीर्या-दान-निक्षेपण-समित्या-लोकितपान-भोजनानि पञ्च।

वचन गुप्ति वा मनो गुप्ति दो, ईर्या समिति ज्ञान।
आदननिक्षेपण समिति वा, आलोकित रसपान॥
अहिंसा व्रत की पाँच भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अहिंसाव्रत-भावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्-यनुवीचि-भाषणं च पञ्च।

क्रोध लोभ भीरुत्व हास्य का, करना प्रत्याख्यान।
अनुवीचिभाषण करना ये, पाँच भावना नाम॥
सत्य व्रत की पाँच भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सत्यव्रत-भावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

शून्यागार विमोचिता-वास-परो-परोधाकरण-भैक्ष्यशुद्धि-सधर्मा-विसंवादा: पञ्च।

शून्य विमोचितवास करे पर, किसी को न रोके।
भैक्ष्यशुद्धि रख सहधर्मी से, विसंवाद रोके॥
अचौर्य व्रत की पाँच भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अचौर्यव्रत-भावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

स्त्री-राग-कथाश्रवण-तन्मनो-हरांग-निरीक्षण-पूर्व-रतानुस्-मरण-
वृष्येष्ट-रस-स्व-शरीर-संस्कार-त्यागाः पञ्च।

स्त्री राग कथा ना सुनना, अंग न उनके निहार।
पूर्व भोग तन सजना त्यागें, इष्ट गरिष्ठ आहार॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाँच भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्यव्रत-भावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

मनोज्ञा-मनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च।

पंचेन्द्री के इष्ट विषय का, राग त्याग करना।
इनके ही अनिष्ट विषयों का, द्वेष त्याग करना॥
अपरिग्रह व्रत की पाँच भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अपरिग्रहव्रत-भावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

हिंसा-दिष्विहा-मुत्रा-पाया-वद्य-दर्शनम्।

पाँच पाप हिंसादिक दे दुख, इसभव परभव में।
दुर्गति निन्दा नाश कराएँ, अपयश भव-भव में॥
करें अपाय अवद्य भावना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अपाय-अवद्यभावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

दुःख-मेव वा।

हिंसादिक ये पाप सभी तो, दुख ही होते हैं।
एसी करें भावना तो व्रत, दृढ़ ही होते हैं॥
मोक्षशास्त्र में पाप त्यागना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पापदुःख निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्य-माना-विनयेषु।

जीवों में मैत्री गुणियों में, सदा प्रमोद रखें।
दुखियों में करुणा, दुर्जन में, नित माध्यस्थ रहें॥
इन भावों से व्रत दृढ़ रखना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतभावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११।

जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम्।

संवेग व वैराग्य प्राप्ति को, यों चिन्ता करना।
जग के भोग देह जड़ नश्वर, इनमें क्या रमना॥
जग से डर वैराग्य धारना, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैराग्यभावना निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

प्रमत्त-योगात्-प्राण- व्यपरोपणं हिंसा।

प्रमाद द्वारा योग क्रिया से, प्राण प्राणियों का।
वध करना हिंसा कहलाती, रस्ता पापों का॥
मोक्षशास्त्र में हिंसा लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री हिंसालक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

अस-दभिधान-मनृतम्।

असत् बोलना असत्य है ये, अनृत कहलाता।
हिंसा पाप आदि हो इससे, सबको दुख दाता॥
मोक्षशास्त्र में असत्य लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री असत्यलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

अदत्ता-दानं स्तेयम्।

बिना दान दी हुई वस्तु को, लेना चोरी है।
इससे जीवों को दुख होता, हिंसा होती है॥
मोक्षशास्त्र में अचौर्य लक्षण, उमास्वामी कहते।

अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अचौर्यलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

मैथुन-मब्रह्म।

मैथुन ही अबह्म कहाता, मिथुन क्रिया करना।
प्रमाद से हो हिंसा दुख से, जीवों को मरना॥
मोक्षशास्त्र में कुशील लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री कुशीललक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

मूर्च्छा परिग्रहः।

मूर्च्छा को ही कहा परिग्रह, है अभिशाप बड़ा।
सब पापों का पाप यही है, सबके शीश चढ़ा॥
मोक्षशास्त्र में परिग्रह लक्षण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री परिग्रहलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

निःशल्यो-व्रती।

शल्य रहित जो प्राणी होते हैं, वही व्रती होते।
शूलों जैसी शल्य त्यागकर, सुखी गुणी होते।
मोक्षशास्त्र में व्रती चिह्न को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतीलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

अगार्य-नगारश्च।

दो विध व्रती अगारी पहले, जो घर में रहते।
घर तज वन में रहते उनको, अनागार कहते॥
मोक्षशास्त्र में व्रती भेद, को उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतीभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

अणुव्रतोऽगारी।

पाँचों अणुव्रत धारी साधक, व्रती अगारी हैं।
घर गृहस्थी में रहकर करते, सुख तैयारी हैं॥

मोक्षशास्त्र में व्रती अगारी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सागारव्रती लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

दिग्देशा-नर्थ-दण्ड-विरति-सामायिक-प्रोष-धोप-वासोप-भोग-परि-भोग-परिमाणा-तिथि-संविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च।

दिगव्रत देश अनर्थदण्ड व्रत, सामायिक प्रौषध।
उपभोग परिभोग परिणाम व्रत, अतिथिसंविभाग व्रत॥
शील व्रती संपन्न अगारी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शीलव्रत निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता।

व्रती अगारी अंत समय में, समाधि करता है।
प्रीति पूर्वक सल्लेखना का, धर्म धारता है॥
मोक्षशास्त्र में मृत्यु महोत्सव, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सल्लेखनाव्रत निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

शङ्का-कांक्षा-विचिकित्-सान्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टे-रतिचाराः।

शंका कांक्षा विचिकित्सा पर- दृष्टि प्रशंसाएँ।
अन्यदृष्टि संस्तव ये पाँचों, दोष कहे जाएँ॥
ये अतिचार सम्यग्दृष्टि के, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यकदर्शन-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्।

व्रतों और शीलों के होते, पाँच-पाँच अतिचार।
पाँच-पाँच की संख्या होती, क्रम-क्रम के अनुसार॥
मोक्षशास्त्र में अतिचारों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्रतशील-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

बन्ध-वधच्-छेदाति-भारारोप-णान्न-पान-निरोधाः।

बन्ध छेद वध अतिभार का, आरोपण करना।
अन्नपान का निरोध करना, इन्हें पाँच गिनना॥
अहिंसाणुव्रत अतिचार ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अहिंसाणुव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान-कूटलेखक्रिया-न्यासापहार-साकार-मंत्रभेदाः।

मिथ्योपदेश रहोभ्याख्यान, कूटलेख क्रिया।
न्यासापहार साकार मंत्र- भेद पाँच कहिया॥
सत्याणुव्रत अतिचार ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सत्याणुव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

स्तेन-प्रयोग-तदा-हृता-दान-विरुद्ध-राज्याति-क्रम-हीना-धिक-मानोन्-मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः।

चोरी को प्रेरित कर उनका, ले लेना सामान।
राज्य विरुद्ध चल नापतौल में, हीनाधिक उन्मान॥
प्रतिरूपक व्यवहार दोष पन, अचौर्य अणुव्रत के।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अचौर्याणुव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

पर-विवाह-करणे-त्वरिका-परिगृहीता-परिगृहीता-गमनानङ्ग-क्रीडा-काम-तीव्राभिनि-वेशाः।

परविवाह वा व्यभिचारिणी, वा परनारी संग।
तीव्र काम की करें कामना, क्रीड़ा करें अनंग॥
दोष ब्रह्मचर्याणुव्रत पन, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मचर्याणुव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्य-दासी-दास-कुप्य-भाण्ड-प्रमाणा-तिक्रमाः।

क्षेत्र वास्तु के, स्वर्ण रजत के, धन धान्यों के क्रम।

दास-दासियाँ, कुप्य-भाण्ड के, प्रमाण के अतिक्रम॥
दोष अपरिग्रह अणुव्रत के, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अपरिग्रहाणुव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

ऊर्ध्वा-धस्-तिर्यग-व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तरा-धानानि।

ऊर्ध्व अधो तिर्यग् सीमा के, बाहर तक जाना।
सीमित क्षेत्र बढ़ाना, सीमा- विस्मृत कर जाना॥
दिग्व्रत के अतिचार पाँच ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री दिग्व्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

आनयन-प्रेष्य-प्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल-क्षेपाः।

शब्द बोलकर, रूप दिखाकर, पुद्गल क्षेपण कर।
वस्तु भेजना और मँगाना, सीमा के बाहर॥
दोष देशव्रत के पाँचों ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री देशव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्या-समीक्ष्याधि-कर-णोप-भोग-परि-भोगा-नर्थक्यानि।

हँसकर असभ्य वचन बोलना, देह कुचेष्ट करें।
बहुत बोलना कार्य लक्ष्य बिन, बहुत पदार्थ रखें॥
अनर्थदण्ड के अतिचार ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनर्थदण्डव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

योग-दुष्प्रणि-धाना-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि।

दुष्प्रयोग मन वचन काय का, करना ना सत्कार।
सामायिक को भूल हि जाना, ये पाँचों अतिचार॥
अतिचार सामायिक के ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सामयिक-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

अप्रत्य-वेक्षिता-प्रमार्जितोत्-सर्गादान-संस्तरोप-क्रमणा-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि।

देखे शोधे बिन रख देना, मलो-मूत्र तज लें।
लेना वस्तु बिछाना संस्तर, मान न कर भूलें॥
प्रोषध के अतिचार पाँच ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रोषधव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३४॥

सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्रा-भिषव-दुःपक्वा-हाराः।

सचित्त वा उससे सम्बन्धित, सम्मिश्रित आहार।
अभिषव वा दुःपक्व रूप ये, पाँच दोष अतिचार॥
अतिचार भोग परिभोग के, उमास्वामी कहते॥
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री भोग-परिभोगपरिमाणव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३५॥

सचित्त-निक्षेपा-पिधान-पर-व्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः।

सचित्त पर रखना या ढकना, पर वस्तु देना।
मान न रखना ईर्ष्या करना, अन्य समय लेना॥
अतिथि दान के पाँच दोष ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अतिथिसंविभागव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३६॥

जीवित-मरणा-शंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध निदानानि।

जीने की मरने की इच्छा, मित्रों से अनुराग॥
सुख अनुबन्ध निदान करण ये, पाँच दोष के भाग॥
सल्लेखना के अतिचार ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सल्लेखनाव्रत-अतिचार निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३७॥

अनुग्रहार्थं स्वस्याति-सर्गो दानम्।

निज पर के उपकार हेतु धन, आदि दिया जाता।
सम्यग्ज्ञान पुण्य साधन वह, दान कहा जाता॥
मोक्षशास्त्र में दान व्यवस्था, उमास्वामी कहते।

अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री दानलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३८॥

विधिद्रव्य दातृ-पात्र-विशेषात्-तद्-विशेषः।

नवधा भक्ति पूर्वक विधि से, देय द्रव्य देना।
विशेष दाता पात्र आदि में, विशेषता लेना॥
विशेष दान से विशेष पुण्य को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विशेषदानलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३९॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

शुभ पुण्य आस्रव प्राप्त करने, शील व्रत धारण करें।
कर दान हो उपकार निज पर, दोष सब हारण करें॥
सप्तम सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले सल्लेखना को, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ सप्तम अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, दान पुण्य हो जाए॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र सप्तम अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

इस सप्तम अध्याय से, करें व्रतों से प्रेम।
पाप वृत्तियाँ नष्ट हों, जग में हो सुख क्षेम॥
जग में हो सुख क्षेम तो, विश्व बने परिवार।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, सुखी रहे संसार॥

(ज्ञानोदय)

त्याग तपस्या व्रत संयम बिन, जब संसार न चल सकता।
तो फिर धर्म चलेगा कैसे, यह चिन्तन आवश्यक था॥
लेकिन ध्यान दिया न इस पर, कहाँ साधना फिर होगी।
बने तीन सौ त्रेसठ मत तो, कहाँ सुखी आत्मा होगी॥१॥
बिन संयम सुख शान्ति कल्पना, सचमुच भव का भ्रमण कहा।
पाप व्यसन आतंक कष्ट दे, दुखवर्धक हर कर्म रहा॥

पर व्रत संयम से संरक्षित, धर्म मात्र जिन धर्म रहा।
सो भयभीत न होकर प्यारे, व्रत लो पहला धर्म रहा॥२॥
व्रती बने बिन अगर मर गए, तो पर्याय विफल होगी।
दीक्षा लेकर अगर मरे तो, नर पर्याय सफल होगी॥
पिछी कमण्डल धर न सके तो, धरो संयमासंयम को।
पाँच अणुव्रत सप्त शीलव्रत, पथ दो अपनी आतम को॥३॥
व्रत उपवास क्रिया है जड़ की, भ्रम पालो ना पलवाओ।
दान पुण्य है मोक्षमार्ग का, साधन समझो समझाओ॥
काल लब्धि का मुँह ना ताको, इतना तो पक्का होगा।
आज नहीं तो कल या परसों, संयम तो धरना होगा॥४॥
अणुबमों से इस दुनियाँ का, भला कभी भी ना होगा।
अणुव्रतों से अपना पर का, भला सभी का झट होगा॥
महाव्रतों को धारण करने, दोष हरण की भक्ति मिले।
'सुव्रत' मृत्यु महोत्सव कर के, भव दुख से झट मुक्ति मिले॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र सप्तम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह सप्तम अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अष्टम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

मिथ्यादर्शना-विरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः।

मिथ्यादर्शन अविरति बारह, पन्द्रह रहे प्रमाद।
कुल पच्चीस कषाय योग त्रय, बन्ध हेतु हैं पाँच॥
मोक्षशास्त्र में बन्ध हेतु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

सकषायत्वाज्-जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गला-नादत्ते स बन्धः।

कषाय मय होने से प्राणी, कर्म योग्य पुद्गल।
करता है स्वीकार उसी को, बन्ध कहा दुख दल॥
मोक्षशास्त्र में बन्ध कथन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धस्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

प्रकृति-स्थित्यनु-भव-प्रदेशास् तद्-विधयः।

प्रकृति स्थिति अनुभव[१] प्रदेश, चार प्रकार यही।
भेद बन्ध के कहलाते हैं, दुख के द्वार यही॥
मोक्षशास्त्र में बन्ध भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बन्धभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनी-यायु-र्नाम-गोत्रान्तरायाः।

ज्ञान-दर्शनावरण वेदनी, मोहनीय आयु।
नाम गोत्र वा अन्तराय ये, द्रव्य कर्म कह दूँ॥
प्रकृतिबन्ध के आठ भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकृतिबन्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

पञ्च-नव-द्व्यष्टा-विंशति-चतुर्द्वि-चत्वा-रिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम्।

ज्ञानावरण पाँच दर्शन नौ, वेदनीय के दो।
अट्ठाईस कुल मोहनीय के, चार आयु के हों॥

---

१. अनुभाग

ब्यालीस नाम गोत्र के दो हों, अन्तराय पाँचों।
प्रकृतिबन्ध की उत्तर प्रकृति, इस विध ये वाँचों॥
मोक्षशास्त्र में उत्तर प्रकृतियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तरप्रकृति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

मति-श्रुता-वधि-मनःपर्यय-केवलानाम्।

मति श्रुत अवधि मनःपर्यय वा, केवलज्ञान रहे।
इन्हें आवरण करने पाँचों, ज्ञानावरण कहे॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञानावरणी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावरणीयभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

चक्षु-रचक्षु-रवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यान-गृद्धयश्च।

चक्षु अचक्षु अवधि केवल, आवरणी चउ जान।
निद्रा निद्रानिद्रा प्रचला, प्रचलाप्रचला स्त्यान॥
ये कुल नौ दर्शनावरणी, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनावरणीयभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

स-दसद्-वेद्ये।

साता और असाता दोनों, वेदनीय के भेद।
साता सुख दे और असाता, देती भव दुख खेद॥
मोक्षशास्त्र में वेदनीय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

दर्शन-चारित्र-मोहनीया-कषाय-कषाय-वेदनीयाख्यास्-त्रि-द्वि-नव-षोडश-भेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदु-भयान्य-कषाय-कषायौ-हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्-नपुंसक-वेदा अनन्तानु-बन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्-चैकशः क्रोध-

मान-माया-लोभाः।

द्वय विध मोह प्रथम दर्शन के, सम्यक् मिथ्या मिश्र।
अकषाय कषाय ये दूजे, चरितमोहनी चित्र॥
हास्य रति अरति शोक जुगुप्सा, भय वा तीनों वेद।
नो अकषाय वेदनीय के, होते हैं ये भेद॥
अनन्तानुबन्धी अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान संज्वलन।
क्रोध मान माया लोभों सह, सोलह भेद कथन॥
मोहनीय के अट्ठाईस विध, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मोहनीयभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि।

नरक-आयु तिर्यंच मनुज वा, देव-आयु ये चार।
आयु कर्म की उत्तर प्रकृति, के ये भेद विचार॥
मोक्षशास्त्र में आयु भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आयुभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

गति-जाति-शरीराङ्गो-पाङ्ग-निर्माण-बन्धन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानु-पूर्व्यगुरु-लघूपघात-परघाता-तपो-द्योतोच्छ्वास-विहायो-गतयः प्रत्येक-शरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च।

गति जाति शरीर अंगोपांग, निर्माण बन्धन संघात।
संस्थान संहनन स्पर्श रस गन्ध, वर्ण आनुपूर्वी साथ॥
अगुरुलघु उपघात परघात, आतप वा उद्योत।
उच्छ्वास विहायगति इक्कीसों, अब दस बीसों होत॥
प्रत्येक शरीर त्रस सुभग सुस्वर, सूक्ष्म पर्याप्ति स्थिर।
आदेय यशकीर्ति की उल्टी, बीस व तीर्थंकर॥
नाम कर्म की ब्यालीसों ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नामकर्मभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

उच्चै-र्नीचैश्च।

उच्च गोत्र वा नीच गोत्र ये, दोनों भेद रहे।
जीव विपाकी गोत्र कर्म के, या बहु भेद रहे॥
मोक्षशास्त्र में गोत्र कर्म को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री गोत्रकर्मभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणाम्।

दान लाभ उपभोग भोग वा, वीर्य समझ लीजे।
अन्तराय के पाँच भेद सो, विघ्न नहीं कीजे॥
मोक्षशास्त्र में अन्तराय को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरायकर्मभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

आदितस्-तिसृणा-मन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपम-कोटीकोट्यः परा स्थितिः।

ज्ञान-दर्शनावरण वेदनी, अन्तराय इनकी।
उत्कृष्ट स्थिति तीस कोड़ा-कोड़ी सागर की॥
चार कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री चतुःकर्म-उत्कृष्टस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

सप्तति-र्मोहनीयस्य।

सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर, उत्कृष्ट स्थिति है।
मोहनीय में दर्श मोह की, इतनी स्थिति है॥
मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मोहनीयकर्म-उत्कृष्टस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

विंशति-र्नाम-गोत्रयोः।

बीसों कोड़ाकोड़ी सागर, उत्कृष्ट स्थिति है।
नामकर्म की गोत्र कर्म की, इतनी स्थिति है॥
नाम गोत्र की उत्कृष्ट स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नामगोत्रकर्म-उत्कृष्टस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

त्रयस्-त्रिंशत्-सागरो-पमाण्यायुषः।

आयु कर्म की तेंतीस सागर, उत्कृष्ट स्थिति है।
आयु कर्म में देव नरक की, इतनी स्थिति है॥
आयु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आयुकर्म-उत्कृष्टस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

अपरा द्वादश-मुहूर्ता वेदनीयस्य।

वेदनीय की जघन्य स्थिति, बारह मुहूर्त की।
कम से कम तो इतनी आयु, होती है इसकी॥
वेदनीय की जघन्य स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्म-जघन्यस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

नाम-गोत्रयो-रष्टौ।

नाम कर्म की गोत्र कर्म की, जघन्य स्थिति तो।
आठ मुहूर्त की बतलाई हैं, याद रखो इसको॥
नाम गोत्र की जघन्य स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री नामगोत्रकर्म-जघन्यस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

शेषाणा-मन्त-र्मुहूर्ताः।

ज्ञानदर्शनावरण मोहनी, अन्तराय आयु।
इनकी अन्तरमुहूर्त होती, जघन्य स्थिति आयु॥
पाँच कर्म की जघन्य स्थिति, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकर्म-जघन्यस्थिति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

विपाकोऽनुभवः।

तरह-तरह के फल देने की, शक्ति विपाक रही।
अनुभव इसे कहा जाता या, है अनुभाग यही॥
मोक्षशास्त्र में अनुभागों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनुभागस्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

स यथानाम।

जिसका जैसा नाम रहा है, उसके ही अनुरूप।
कर्मों का फल दर्शन होता, कर्मों के अनुरूप॥
मोक्षशास्त्र में कर्मों के फल, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रकृतिस्वरूप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

ततश्च निर्जरा।

भले बुरे फल दान कर्म कर, सब झड़ जाते हैं।
कर्म निर्जरा यह कहलाती, सूत्र बताते हैं॥
मोक्षशास्त्र में कर्म निर्जरा, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निर्जरा निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योग-विशेषात् सूक्ष्मैक-क्षेत्रावगाह-स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्-वनन्तानन्त-प्रदेशाः।

कर्म हेतु प्रति समय योग से, एक क्षेत्रवासी।
सूक्ष्म अनन्तानन्त कर्म हों, चेतन के साथी॥
मोक्षशास्त्र में प्रदेश बन्ध को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रदेशबन्ध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

सद्-वेद्य-शुभायु-र्नाम-गोत्राणि पुण्यम्।

साता वेदनीय शुभ आयु, नाम गोत्र शुभ-शुभ।
पुण्य रूप ये रहीं प्रकृतियाँ, ब्यालीस शुभ-शुभ॥
मोक्षशास्त्र में पुण्य प्रकृतियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पुण्यप्रकृति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

अतोऽन्यत्-पापम्।

शेष अशुभ जो रही प्रकृतियाँ, रहीं बयासी जो।
पाप रूप वो रही प्रकृतियाँ, दुख की राशी वो॥
मोक्षशास्त्र में पाप प्रकृतियाँ, उमास्वामी कहते।

अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पापप्रकृति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

हैं कर्म के सब बन्ध जग में, पुण्य या फिर पाप के।
जो प्राणियों को दुख दिलाते, हेतु दुख अभिशाप के॥
अष्टम सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले निर्बन्ध होने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ अष्टम अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, कर्म बन्ध नश जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र अष्टम अध्याय पूर्णार्घ्यं अर्घ्यं...॥

जयमाला

(दोहा)

अष्टम ये अध्याय दे, कर्म बन्ध का ज्ञान।
पुण्य महाशुभ कर्म से, तजें पाप विज्ञान॥
तजें पाप विज्ञान सो, हों निर्बन्ध समान।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, पुण्यफला भगवान॥

(ज्ञानोदय)

हैं अनादि से जीव कर्म के, नीर क्षीर जैसे सम्बन्ध।
सो संसारी प्राणी पाते, भव-भव में दुख के अनुबन्ध॥
फिर चौरासी लाख योनियाँ, पाकर दर-दर भटक रहे।
जड़ पुद्गल के कारण चेतन, निज स्वरूप से भ्रमित रहे॥१॥
बहिरातम को अपना माना, अन्तर-आतम बन न सके।
सो परमातम मिली न हमको, अतः कर्म भी कट न सके।
कर्मों के विज्ञान समझ लो, जिनको खुद हमने बाँधा॥
हमको स्वयं काटने होंगे, पर पग-पग पर है बाधा॥२॥
कर्मों के जेलों के बन्धन, जब तक मुक्त नहीं होंगे।
तब तक संसारी प्राणी को, सुख के योग्य नहीं होंगे॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र का अष्टम, यह अध्याय ज्ञान देगा।
कर्म बन्ध के हेतु समझ कर, उन्हें त्यागने पथ देगा॥३॥

व्रत लें उनको शुद्ध बनाने, करें भावना बारम्बार॥
शिथिल पड़ेंगे कर्म बन्ध तब, खुलें निर्जरा से सुख द्वार॥
प्रथम पाप को छोड़ा जाता, पुण्य किया जाता स्वीकार।
पुण्यफला अरिहन्ता बनकर, छूटे स्वयं पुण्य संसार॥४॥
पुण्य क्रियाएँ हेय नहीं है, इतना पक्का कर डालो।
अगर न मुनि बन सकते जब तक, तब तक मुनि के गुण गा लो॥
इस दीक्षानुबन्धी पुण्य से, मुनि दीक्षा हो सन्त बनें।
विद्या के 'सुव्रत' बनकर फिर, अरहत् सिद्ध महन्त बनें॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र अष्टम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दे, यह अष्टम अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

नवम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

आस्रव-निरोध: संवर:।

आस्रव का निरोध जो होता, वह संवर होता।
द्रव्य भाव संवर से चेतन, कर्म मुक्त होता॥

मोक्षशास्त्र में संवर चर्चा, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संवरलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

स गुप्ति-समिति-धर्मा-नुप्रेक्षा-परीषहजय चारित्रैः।

वह संवर तो गुप्ति समिति वा, धर्म अनुप्रेक्षा।
परिषहजय चारित्र छहों विध, होती ले दीक्षा॥
मोक्षशास्त्र में संवर साधन, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संवरहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

तपसा निर्जरा च।

तप से भी हो कर्म निर्जरा, संवर भी तो हो।
तप संवर का मुख्य हेतु सो, भिन्न कथन यह हो॥
मोक्षशास्त्र में तप के फल को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री संवरनिर्जराहेतु निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः।

मन वच काय तीन योगों की, तज स्वेच्छा वृत्ति।
सम्यक् निग्रह कहलाती है, तीन-तीन गुप्ति॥
मोक्षशास्त्र में तीन गुप्तियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री गुप्तिस्वरूपभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

ईर्या-भाषै-षणा-दान-निक्षेपोत्-सर्गाः समितयः।

ईर्या भाषा तथा ऐषणा, आदान-निक्षेपण।
वा उत्सर्ग समिति पाँचों से, संवर हो क्षण-क्षण॥
मोक्षशास्त्र में पाँच समितियाँ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री समितिभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

उत्तम-क्षमा-मार्द-वार्जव-शौच-सत्य-संयम-तपस्त्यागा-किञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः।

उत्तमक्षमा व मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम।
तप त्याग आकिंचन्य अंत में, ब्रह्मचर्य उत्तम॥
मोक्षशास्त्र में दस धर्मों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

अनित्या-शरण-संसा-रैकत्वा-न्यत्वा-शुच्यास्रव संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्म-स्वाख्या-तत्वानु-चिन्तन-मनुप्रेक्षाः।

अनित्य अशरण संसार तथा, एकत्व व अन्यत्व।
अशुचि आस्रव संवर निर्जरा, लोक बोधिदुर्लभ॥
और धर्म अनुप्रेक्षा बारह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनुप्रेक्षाभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

मार्गाच्य-वन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः।

पथ से च्युत ना होने को वा, कर्म निर्जरा को।
जो सहने के योग्य रहे हैं, बाईस परिषह वो॥
मोक्षशास्त्र में परिषह संवर, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री परिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

क्षुतपिपासा-शीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्या-रति-स्त्रीचर्या-निषद्या-शय्या-क्रोश-वध-याचना-लाभ-रोग-तृणस्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञाना-दर्शनानि।

क्षुधा तृषा शीतोष्ण दंशमश, नाग्न्य अरति स्त्रीबाध।
चर्या निषद्या शय्या आक्रोश, वध याचना अलाभ॥
रोग तृणस्पर्श मल सत्कार-, पुरस्कार प्रज्ञा।
अज्ञान और अदर्शन बाईस, परिषह की संख्या॥
मोक्षशास्त्र में बाईस परिषह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री परिषहभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

सूक्ष्म-सांपराय-छद्मस्थ-वीतरागयोश्-चतुर्दश।

सूक्ष्म साम्पराय छद्मस्थी, वीतराग प्रभु को।
दस ग्यारह बारह गुण में तो, चौदह परिषह हों॥
मोक्षशास्त्र में छद्मस्थों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्दश-परिषहभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १०॥

एकादश जिने।

बाईस में से ग्यारह परिषह, जिन अरिहन्तों में।
सम्भव हो उपचार रूप से, प्रभु भगवन्तों में॥
मोक्षशास्त्र में जिन के परिषह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनपरिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ११॥

बादर-साम्पराये सर्वे।

बादर साम्पराय में छह से, दसवें गुणस्थान।
तक तो पूरे बाईस परिषह, सम्भव होते जान॥
मोक्षशास्त्र में सभी परिषह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सर्वपरिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १२॥

ज्ञानावरणे प्रज्ञा-ज्ञाने।

ज्ञानावरण कर्म के कारण, प्रज्ञा वा अज्ञान।
ये दो परिषह सम्भव होते, दीन हीन मतिमान॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान परिषह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावरणीय-परिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १३॥

दर्शन-मोहान्तराययो-रदर्शना-लाभौ।

दर्शनमोहनीय से परिषह, दोष अदर्शन हो।
अन्तराय से अलाभ होता, प्राप्त न साधन हो॥
दर्शन अन्तराय परिषह को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनमोहनीय-अन्तरायपरिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १४॥

चारित्र-मोहे नाग्न्या-रति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः।

चरितमोह से नाग्न्य अरति स्त्री, निषद्या व आक्रोश।
वध याचना सत्कार-पुरस्कार, सात परिषह दोष॥
चरितमोह के सात परिषह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्रमोहनीय-परिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १५॥

वेदनीये शेषाः।

शेष रहे ग्यारह परिषह वो, वेदनीय से हों।
क्षुधा तृषा शीतोष्ण दंशमश, चर्या शय्या हों॥
वध रोग तृणस्पर्श मल आदि, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वेदनीय-परिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १६॥

एकादयो भाज्या-युगपदे-कस्मिन्-नैकोनविंशतेः।

एक साथ में एक आत्म में, एक परिषह से।
हो सकते उन्नीस परिषह, अधिक अधिकतम से॥
कम से कम या अधिक परिषह, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवपरिषह निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १७॥

सामायिकच्-छेदोपस्थापना-परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यात-मिति चारित्रम्।

सामायिक छेदोपस्थापन, परिहारविशुद्धि ये।
सूक्ष्मसाम्पराय यथाख्यात कुल, चारित पाँच कहे॥
पाँच तरह के चारित्रों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री चारित्रभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १८॥

अनशनाव-मौदर्य-वृत्ति-परिसंख्यान-रस-परित्याग-विविक्त-शय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः।

अनशन अवमौदर्य वृत्तिपरि-संख्यान रसपरित्याग।
विविक्तशय्यासन कायक्लेश ये, कहे छहों तप बाह्य॥

मोक्षशास्त्र में बाह्य छहों तप, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री बाह्यतप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १९॥

प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्-युत्तरं।

प्रायश्चित्त विनय वैयावृत्य, स्वाध्याय व्युत्सर्ग।
तथा ध्यान छह अंतरंग तप, जिनशासन के पर्व॥
मोक्षशास्त्र में अंतरंग तप, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरंगतप निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २०॥

नव-चतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्-ध्यानात्।

नवविध प्रायश्चित विनय चउ, दस विध वैयावृत्य।
है स्वाध्याय पाँच विध वाला, दो विध का व्युत्सर्ग॥
भेद ध्यान के पूर्व सभी ये, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरंगतप-उपभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २१॥

आलोचना प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारो-पस्थापनाः।

आलोचन प्रतिक्रमण तदुभय, विवेक व व्युत्सर्ग।
तप छेद परिहार उपस्थापना, नव विध प्रायश्चित्त॥
प्रायश्चित्त के नव भेदों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रायश्चित्त-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २२॥

ज्ञान-दर्शन-चारित्रोपचाराः।

ज्ञान दर्श चारित्र विनय वा, है उपचार विनय।
चार तरह का यही विनय तप, खोलें मोक्ष निलय॥
मोक्षशास्त्र में चार विनय तप, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री विनयतप-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २३॥

आचार्यो-पाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम्।

आचार्योपाध्याय तपस्वी, शैक्ष ग्लान गण कुल।

संघ साधु मनोज्ञ दस विध, वैयावृत्य सफल॥
वैयावृत्य दसों प्रकार की, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वैयावृत्यतप-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २४॥

वाचना-पृच्छनानु-प्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशाः।

वाचन पृच्छन अनुप्रेक्षा वा, आम्नाय धर्मोपदेश।
है स्वाध्याय पाँच प्रकार का, दान पुण्य संदेश॥
पाँच तरह स्वाध्याय भेद को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री स्वाध्यायतप-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २५॥

बाह्या-भ्यन्तरो-पध्योः।

बाह्य धनादिक अंतरंग के, क्रोध आदि संसर्ग।
उपधि कहाती इन्हें त्यागना, दो प्रकार व्युत्सर्ग॥
मोक्षशास्त्र में व्युत्सर्गों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री व्युत्सर्गतप-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २६॥

उत्तम-संहननस्-यैकाग्र-चिन्ता-निरोधो ध्यान-मान्त-र्मुहूर्तात्।

उत्तम संहनन वाले जन का, एक विषय में तो।
चित्त लगाना ध्यान अकेला, अंतरमुहूर्त हो॥
मोक्षशास्त्र में ध्यान चिह्न को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यानतप-लक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २७॥

आर्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि।

आर्त्त रौद्र वा धर्म शुक्ल ये, चार ध्यान होते।
आर्त्त रौद्र तो अप्रशस्त हों, दो प्रशस्त होते॥
मोक्षशास्त्र में ध्यान चतुर्विध, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ध्यानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २८॥

परे मोक्ष-हेतू।

चार ध्यान में ध्यान अंत के, ध्यान रहे जो दो।
धर्म ध्यान वा शुक्ल ध्यान ये, मोक्ष हेतु हों दो॥
मोक्षशास्त्र में मोक्ष हेतु को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षहेतु-ध्यानभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २९॥

आर्त-ममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्-विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः।

अप्रिय पदार्थ के मिलने पर, उन्हें हटाने को।
चिन्तन-चिन्ता करना पहला, आर्त्तध्यान है वो॥
अनिष्टसंयोग आर्त्तध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अनिष्टसंयोग-आर्त्तध्यान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३०॥

विपरीतं मनोज्ञस्य।

प्रिय पदार्थ वियोग होने पर, उसको पाने को।
चिन्तन-चिन्ता करना दूजा, आर्त्तध्यान है वो॥
इष्टवियोग आर्त्तध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री इष्टवियोग-आर्त्तध्यान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३१॥

वेदना-याश्च।

दुख पीड़ाएँ हो जाने पर, उन्हें हटाने को।
चिन्तन चिन्ता करना तीजा, आर्त्तध्यान है वो॥
पीड़ाचिन्तन आर्त्तध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री पीड़ाचिन्तन-आर्त्तध्यान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३२॥

निदानं च।

भावी भोगों आकाक्षाओं, भव सुख पाने को।
चिन्तन चिन्ता करना चौथा, आर्त्तध्यान है वो॥
निदान नामक आर्त्तध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निदान-आर्त्तध्यान निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३३॥

त-दविरत-देशविरत-प्रमत्त-संयतानाम्।

आर्त्तध्यान वह अविरत को हो, देशविरत को भी।
प्रमत्तसंयत चार तरह के, हो जीवों को भी॥
आर्त्तध्यान के स्वामी जन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री आर्त्तध्यान-स्वामी निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३४॥

हिंसानृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्र-मविरत-देश-विरतयोः।

हिंसा झूठ चौर्य परिग्रह, संरक्षण को तो।
अविरत देशविरत के होता, रौद्रध्यान है वो॥
मोक्षशास्त्र में रौद्रध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री रौद्रध्यान-स्वामी निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३५॥

आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम्।

आज्ञा अपाय विपाक संस्थान, चार तरह के ये।
चिन्तन करके चित्त लगाना, धर्म ध्यान हैं ये॥
मोक्षशास्त्र में धर्म ध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मध्यान-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३६॥

शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः।

पृथक्त्व व एकत्ववितर्क ये, शुक्ल ध्यान हैं दो।
श्रुत केवली पूर्व विदों को, द्वय श्रेणी में हो॥
मोक्षशास्त्र में शुक्ल ध्यान दो, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री प्रथमद्विशुक्लध्यान-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३७॥

परे केवलिनः।

सूक्ष्मक्रिया-प्रतिपाति व्युपरत-क्रियानिर्वृत्ति ध्यान।
होते नाथ केवली प्रभु को, ये दो शुक्ल ध्यान॥
शेष रहे दो शुक्ल ध्यान को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अंतिमशुक्लध्यान-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३८॥

पृथक्-त्वैकत्व-वितर्क-सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति-व्युपरत-क्रिया-निवर्तीनि।

पृथक्त्व व एकत्ववितर्क अरु, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपात।
व्युपरतक्रियानिर्वृति चारों, शुक्ल ध्यान कहलात॥
मोक्षशास्त्र में शुक्ल ध्यान चउ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शुक्लध्यान-भेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३९॥

त्र्येक-योग-काय-योगा-योगानाम्।

त्रय योगी को पहला, दूजा-, इक योगी को हो।
काय योग वाले को तीजा, चतुर अयोगी को॥
शुक्लध्यान के स्वामी जन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शुक्लध्यान-स्वामी निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४०॥

एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे।

पहले के दो शुक्ल ध्यान तो, इक आश्रय वाले।
वितर्क व वीचार सहित हों, सुख देने वाले॥
मोक्षशास्त्र में शुक्ल विशेषण, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री शुक्लध्यान-विशेषण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४१॥

अवीचारं द्वितीयम्।

दूजा शुक्ल ध्यान वितर्क सह, अवीचार होता।
केवलज्ञान कराने वाला, पाप अन्ध खोता॥
मोक्षशास्त्र में शुक्ल दूसरा, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री द्वितीयशुक्लध्यान-विशेषण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४२॥

वितर्कः श्रुतम्।

वितर्क का मतलब श्रुत होता, सम्यग्ज्ञान रहा।
तर्क तर्कणा ऊहा करना, ये श्रुतज्ञान कहा॥
मोक्षशास्त्र में वितर्क श्रुत को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वितर्कलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४३॥

वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन-योग-संक्रांतिः।

अर्थ और व्यंजन योगों की, जो है संक्रान्ति।
उसको ही वीचार कहा है, पापों से मुक्ति॥
मोक्षशास्त्र में वीचारों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री वीचारलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४४॥

सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोप-शमकोप-शान्तमोह क्षपक-क्षीणमोह-जिनाःक्रमशोऽ संख्येय गुण-निर्जराः।

सम्यग्दृष्टि श्रावक विरता- नन्तवियोजक फिर।
दर्शनमोह-क्षपक उपशामक, शमित मोह क्षपकर॥
क्षीण मोहजिन क्रमिक निर्जरा, असंख्य गुण करते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री असंख्यातगुण-निर्जराक्रम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४५॥

पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातकाः निर्ग्रन्थाः।

पुलाक वकुश कुशील निर्ग्रन्थ, स्नातक पाँचों।
यह निर्ग्रन्थ रहें मुनि इनकी, भक्ति करो नाचो॥
मोक्षशास्त्र में निर्ग्रन्थों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४६॥

संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योप-पाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः।

संयम श्रुत अरु प्रतिसेवना, तीर्थ लिंग लेश्या।
उपपाद स्थान आठ तरह से, उनकी हो व्याख्या॥
निर्ग्रन्थों के अनुयोगों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री निर्ग्रन्थ-अनुयोगभेद निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४७॥

पूर्णार्घ्य (हरिगीतिका)

संसार तो केवल सिखाता, बन्ध भव दुख कर्म के।
ना पंथ दे ना मंत्र दे, दुख मुक्ति के ना धर्म के॥

नौवें सभी अध्याय सूत्रों, के चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले दुख निर्जरा को, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ नौंवा अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, करें निर्जरा कार्य॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र नवम अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

नवम सूत्र अध्याय दे, कर्म निर्जरा ज्ञान।
हरे कर्म के बन्ध सब, भक्त करे भगवान्॥
भक्त करे भगवान सो, छूटेगा भव राग।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, धारें सब वैराग्य॥

(ज्ञानोदय)

यह संसार सिखाता केवल, दुख कर्मों के बन्धन को।
सो सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर, मिलते भव दुख चेतन को॥
यदि संसार दशा में सीखें, कला कमल सब जीवन की।
हों निर्लिप्त कर्म कीचड़ से, आश जगे कुछ चेतन की॥१॥
कुन्दकुन्द सम कुन्दन जैसा, तत्त्व मोह में फँसा हुआ।
जैसे कीचड़ में सोना हो, ज्यों पिंजरे में फँसा सुआ॥
विश्व मोह से हुआ पराजित, अतः मोह विस्तार बड़ा।
अगर मोह को जीत लिया तो, आगे केवलज्ञान खड़ा॥२॥
मोक्ष प्राप्ति में फिर क्या संशय, फिर तो चेतन सुख भोगे।
यह तब ही सार्थक होगा जब, आगम सूत्र समझ लोगे॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र का नौवाँ, यह अध्याय बताता है।
जिनशासन में रूप दिगम्बर, मुनि सर्वोत्तम गाथा है॥३॥
मुनि बन सम्यक् करो तपस्या, कर्म निर्जरा करने को।
मुनि दीक्षा बिन जीवन होगा, खानापूर्ति करने को॥
अपना जीवन सार्थक करने, करो निर्जरा दीक्षा लो।
'विद्या' के 'सुव्रतसागर' सम, कर्म हरण की शिक्षा लो॥४॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र नवम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह नौवाँ अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

दसम अध्याय अर्घ्यावली

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये।

(विष्णु)

जिनपथ नेता कर्म विजेता, विश्व तत्त्व ज्ञाता।
जिनगुण पाने जिनवन्दन कर, कहें सूत्र गाथा॥
श्री तत्त्वार्थसूत्र आगम भज, अघ अज्ञान हरें।
पूज्य उमास्वामी की कृति को, सदा प्रणाम करें॥

(पुष्पांजलिं...)

मोह-क्षयाज्-ज्ञान-दर्शना-वरणान्तराय-क्षयाच्च केवलम्।

ज्यों ही मोह हुआ क्षय त्यों ही, ज्ञानावरणी क्षय।
दर्शन अन्तराय क्षय हों त्यों, केवलज्ञान उदय॥
मोक्षशास्त्र में ज्ञान-केवली, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री केवलज्ञान-उत्पत्ति निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ १॥

बन्ध-हेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः।

बन्ध हेतु के क्षय होने वा, कर्म निर्जरा से।
मोक्ष प्राप्त हो सब कर्मों के, क्षय हो जाने से॥
मोक्षशास्त्र में मोक्षतत्त्व को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ २॥

औपशमिकादि-भव्यत्वानां च।

औपशमिक आदिक भावों वा, भव्य भाव के भी।
अभाव से ही मोक्ष प्राप्त हो, पुद्गल क्षय से ही॥
मोक्षशास्त्र में भाव अभाव को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री अभावलक्षण निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ३॥

अन्यत्र केवल-सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः।

केवलसम्यक् केवलज्ञानम्, वा केवलदर्शन।
सिद्ध आदि में भाव मुक्ति में, होते नहीं हनन॥
मोक्षशास्त्र में सिद्ध भाव चउ, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धभाव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ४॥

त-दनन्तर-मूर्ध्वं गच्छत्या-लोकान्तात्।

अभाव भावों का क्षय हो तो, जीव मुक्त होते।
मुक्त जीव लोकान्त विराजें, भव दुख को खोते॥
मोक्षशास्त्र में मोक्ष धाम को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षधाम निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ५॥

पूर्व - प्रयोगा-दसंगत्वाद्-बन्धच्-छेदात्-तथा-गति-परिणामाच्च।

पूर्व प्रयोग से संग नाश से, बन्धन झड़ने से।
मुक्ति जीव का ऊर्ध्वगमन हो, वह गति होने से॥
मोक्षशास्त्र में ऊर्ध्वगमन को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री ऊर्ध्वगमन-स्वभाव निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ६॥

आविद्ध-कुलाल-चक्रवद्-व्यपगत-लेपालांबु-वदेरण्ड-बीज-वदग्नि शिखावच्च।

गए घुमाये कुंभ चक्र सम, अलेप तुमड़ी सम।
अरण्ड बीज सम अग्नि शिखा सम, होता सिद्ध गमन॥

मोक्षशास्त्र में दृष्टान्तों को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री दृष्टान्त निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ७॥

धर्मास्ति-काया-भावात्।

धर्म रूप जब अस्तिकाय का, अभाव होने से।
मुक्त जीव लोकान्त बाह्य फिर, रुकते जाने से॥
मोक्षशास्त्र में ऊर्ध्वगति को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री लोकबाह्यगमन-निषेध निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ८॥

क्षेत्र-काल-गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येक-बुद्ध-बोधित-ज्ञाना-
वगाह-नान्तर-संख्याल्प-बहुत्वतः साध्याः।

क्षेत्र काल गति लिंग तीर्थ वा, चरित प्रत्येक बुद्ध।
बोधित- बुद्ध ज्ञान अवगाहन, अंतर संख्य बहुत्व॥
तेरह विध से सिद्ध साध्य को, उमास्वामी कहते।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थसूत्र को, हम नमोऽस्तु करते॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धसाध्य-अनुयोग निरूपक सूत्राय अर्घ्यं...॥ ९॥

पूर्णार्घ्यं (हरिगीतिका)

ज्यों घतिया हों नष्ट त्यों ही, प्राप्त केवलज्ञान हो।
सब कर्म ज्यों ही नष्ट हों त्यों, जीव का निर्वाण हो॥
दसवें सभी अध्याय सूत्रों के, चढ़ाकर अर्घ्य हम।
पूर्णार्घ्य ले निज मोक्ष पाने, पालते 'सुव्रत' धरम॥

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ का, पढ़ दसवाँ अध्याय।
अर्घ्य चढ़ा हर सूत्र के, कर लें मोक्ष उपाय॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र दशम अध्याय पूर्णार्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

दसवाँ यह अध्याय दे, कर्म रहित निज मोक्ष।
जगत भ्रमण को त्याग के, पाएँ निज का सौख्य॥

पाएँ निज का सौख्य सो, हो लोकाग्र निवास।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, प्रभु जैसा संन्यास॥

(ज्ञानोदय)

हर संसारी की यात्रा तो, निगोद से प्रारम्भ हुई।
यदि पुरुषार्थ किया सम्यक् तो, सिद्ध गोद में अंत हुई॥
यदि भव भोगों में डूबे तो, दो हजार सागर खोकर।
फिर बन बैठे इतर निगोदी, फिर क्या होगा रो-रोकर॥१॥
अतः मोक्ष पाने को चेतन, मोह कर्म को विजित करो।
केवलज्ञान मोक्ष पा करके, खुद को दुख से रहित करो॥
भव संसार दुखों से बचने, उन्हें समझ कर त्याग करो।
मोक्ष सुखों को पाने चेतन, झट सम्यक् पुरुषार्थ करो॥२॥
भव दुख तो सब बहुत जानते, अतः मोक्ष सुख पहचानो।
सिद्ध सुखों का क्या कहना है, सिद्धों की महिमा जानो॥
सिद्ध अचल ध्रुव अनुपम गति हैं, चिदानन्द का रस पीते।
लोक शिखर पर हुए विराजित, जन्म मरण दुख से रीते॥३॥
सिद्धों जैसा हर संसारी, चेतन का स्वभाव होता।
लेकिन जड़ पुद्गल के कारण, चेतन निज स्वभाव खोता॥
निज स्वभाव से विचलित जन को, अगर मिलेगा सम्यग्ज्ञान।
तो निज स्वभाव को पाकर वे, बन जाएंगे सिद्ध समान॥४॥
सो तत्त्वार्थसूत्र का दसवाँ, यह अध्याय पढ़ो समझो।
जो निगोद तज सिद्ध गोद दे, सो भव दुख में ना उलझो॥
निज धन से सम्पन्न बनें हम, पर का सारा मोह तजें।
सो 'विद्या' के 'सुव्रतसागर', श्री तत्त्वार्थसूत्र पूजें॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र दशम अध्याय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तत्त्वार्थसूत्रजी नित करे, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, यह दसवाँ अध्याय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महासमुच्चय पूर्णाऽर्घ्य

(हरिगीतिका)

अज्ञान दुख को नाश करने, सूत्र का आगम दिए।
सिद्धान्त की विद्या दिखाकर, तत्त्व शुद्धातम दिए॥
ऐसा दिया भण्डार श्रुत का, पार हम क्या पा सकें।
करके नमोऽस्तु सिर झुकाएँ, गीत 'सुव्रत' गा भजें॥

(दोहा)

त्रय सौ उनहत्तर लिए, तीन छहों नव योग।
अर्घ्य चढ़ा तत्त्वार्थ के, बनें ज्ञान संयोग॥

ॐ ह्रीं श्री नवषष्टि-अधिक-त्रिशतक सूत्ररूपेण तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो महासमुच्चय पूर्णाऽर्घ्यं...।

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

सूत्र ग्रन्थ तत्त्वार्थ के, उत्तम दस अध्याय।
सुनो पढ़ो पाठन करो, शुद्ध अर्थ सुखदाय॥
शुद्ध अर्थ सुखदाय तो, देता सम्यग्ज्ञान।
कर नमोऽस्तु हम चाहते, ज्ञाता दृष्टा राम॥

(ज्ञानोदय)

श्रद्धा को मजबूत बनाकर, अगर ज्ञान ना पाएंगे।
फिर तो जल्दी निज श्रद्धा से, हम विचलित हो जाएंगे॥
श्रद्धा से यदि भ्रष्ट हुए तो, भ्रष्ट भ्रष्ट हो जाएंगे।
फिर चारित्र धारने के हम, योग्य नहीं हो पाएंगे॥१॥
बिन चारित्र मोक्ष के सपने, बस सपने रह जाएंगे।
दुर्गतियों के कष्ट भोगने, काल अनन्त गवांएंगे॥
अतः प्रथम सम्यक् श्रद्धा कर, सम्यग्ज्ञान प्राप्त करलो।
श्री तत्त्वार्थसूत्र का अध्ययन, सम्यक् रूप प्राप्त करलो॥२॥
यह तत्त्वार्थसूत्र ना केवल, हमें बनाएगा ज्ञानी।
लेकिन रत्नत्रय देकर के, कर देगा आतम-ध्यानी॥
आतम-ध्यानी बनकर हमको, केवलज्ञानी बनना है।

मुक्तिवधू से ब्याह रचाने, खुद को सज्जित करना है॥३॥
मुक्ति स्वयंवर ना हो जब तक, तब तक यह तत्त्वार्थ पढ़ो।
जिससे मान प्रतिष्ठा पाकर, जग में आगे खूब बढ़ो॥
यह तत्त्वार्थसूत्र मंगलमय, सभी अमंगल हर लेगा।
रोग शोक अज्ञान मिटाकर, ऋद्धि-सिद्धि से भर देगा॥४॥
अतः न केवल जग में रहना, किन्तु मोक्ष भी पाना है।
जिनशासन की प्रभावना हो, ऐसा लक्ष्य बनाना है॥
जिनवाणी माँ श्रुतदेवी से, ज्ञान ऋद्धि हम माँग रहे।
'विद्या' के 'सुव्रत' पर ऐसा, श्रुत का आशीर्वाद रहे॥५॥

ॐ ह्रीं श्री तत्त्वार्थसूत्र समूहेभ्यो महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें सूत्र तत्त्वार्थ यह, विश्व शान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दे, तत्त्वार्थसूत्र श्रुतराय॥

(पुष्पांजलिं...)

प्रशस्ति

कोरोना के काल में, रक्षाबन्धन पर्व।
श्री तत्त्वार्थ विधान के, लिखे भक्ति के अर्घ्य॥
छत्री वाले शिवपुरी, दो हजार सन् बीस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥इति शभम् भूयात्॥

===

श्री तत्त्वार्थसूत्र विधान-आरती

(लय–छूम छूम छना ननना बाजे...)

छूम-छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया छूम-छूम....

श्रीतत्त्वार्थसूत्र आगम की, पूज्य उमास्वामी गुरुजन की ।
सादर भक्ति रचा के, बाबा करूँ आरतिया॥
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम....

चारों अनुयोगों की वाणी, मुमुक्षुओं की है कल्याणी।
सबको राह दिखाए, बाबा करूँ आरतिया॥
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया -छूम-छूम....

जैन धर्म का मेरुदण्ड है, ये प्रचण्ड अखण्ड करण्ड है।
ज्ञान ऋद्धि झलकाये, बाबा करूँ आरतिया॥
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम....

एक बार जो पाठ रचाए, इक उपवास वही फल पाए।
ज्ञान चेतना पाए, बाबा करूँ आरतिया॥
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम....

इसको जो भी पढ़े पढ़ाये, कर्म रोग भय भूत भगाए।
'सुव्रत' आतम ध्याए, बाबा करूँ आरतिया॥
करूँ आरतिया बाबा, करूँ आरतिया- छूम-छूम....

===

तत्त्वार्थसूत्रम्

(अनुष्टुप)

मोक्ष-मार्गस्य नेतारं, भेत्तारं कर्म-भू-भृताम्।
ज्ञातारं विश्व तत्त्वानां, वन्दे तद्गुण-लब्धये॥

(स्त्रग्धरा)

त्रैकाल्यं द्रव्य-षट्कं, नव-पद-सहितं जीव षट्काय-लेश्याः।
पञ्चान्ये चास्ति-काया, व्रत-समिति-गति-ज्ञान-चारित्र-भेदाः॥
इत्ये-तन्मोक्षमूलं, त्रिभुवन-महितैः प्रोक्त-मर्हद्-भिरीशैः।
प्रत्येति श्रद्धधाति, स्पृशति च मतिमान् यः स वै शुद्ध-दृष्टिः॥ १॥

(आर्या)

सिद्धे जयप्प-सिद्धे, चउव्विहारा-हणाफलं पत्ते।
वंदित्ता अरहंते, वोच्छं आराहणा कमसो॥२॥
उज्जोवण-मुज्जवणं, णिव्वहणं साहणं च णिच्छरणं।
दंसण-णाण चरित्तं, तवाण-माराहणा भणिया॥३॥

प्रथमोऽध्यायः

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः॥१॥ तत्त्वार्थ-श्रद्धानं सम्यग्दर्शनम्॥२॥ तन्-निसर्गा-दधिगमाद् वा॥३॥ जीवा-जीवास्रव-बन्ध-संवर-निर्जरा मोक्षास्-तत्त्वम्॥ ४॥ नाम-स्थापना-द्रव्य-भाव-तस्तन्न्यासः॥ ५॥ प्रमाण-नयै-रधिगमः॥ ६॥ निर्देश-स्वामित्व-साधनाधिकरण-स्थिति-विधानतः॥ ७॥ सत्संख्या-क्षेत्र-स्पर्शन-कालान्तर-भावाल्प-बहुत्वैश्च ॥८॥ मति-श्रुता-वधि-मनःपर्यय-केवलानि ज्ञानम्॥९॥ तत्प्रमाणे॥१०॥ आद्ये परोक्षम् ॥११॥ प्रत्यक्ष-मन्यत्॥१२॥ मतिः स्मृतिः संज्ञा चिन्ता-भिनिबोध इत्य-नर्थान्तरम्॥१३॥ तदिन्द्रिया-निन्द्रिय-निमित्तम्॥१४॥ अवग्रहे-हावाय-धारणाः॥१५॥ बहु-बहुविध-क्षिप्रा-निःसृता-नुक्त-ध्रुवाणां सेतराणाम्॥१६॥ अर्थस्य॥१७॥ व्यञ्जनस्यावग्रहः॥१८॥ न चक्षु-रनिन्द्रियाभ्याम्॥१९॥ श्रुतं मति-पूर्वं द्व्यनेक-द्वादश-भेदम्॥२०॥ भव-प्रत्ययोऽवधिर्देव-नारकाणाम्॥२१॥ क्षयोपशम-निमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्॥२२॥ ऋजु-विपुलमती मनःपर्ययः॥२३॥ विशुद्ध्य-प्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः॥२४॥ विशुद्धि-क्षेत्र-स्वामि-विषयेभ्योऽवधि-मनःपर्याययोः ॥२५॥ मति-श्रुतयो-र्निबन्धो द्रव्येष्-वसर्व-

पर्यायेषु॥२६॥ रूपिष्-ववधेः॥२७॥ त-दनन्त-भागे मनःपर्ययस्य॥२८॥ सर्व-द्रव्य-पर्यायेषु केवलस्य॥२९॥ एकादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना-चतुर्भ्यः॥३०॥ मति-श्रुतावधयो विपर्ययश्च॥३१॥ स-दसतो-रवि-शेषाद्-यदृच्छोप-लब्धे-रुन्मत्तवत्॥३२॥ नैगम-संग्रह-व्यवहारर्जु-सूत्र-शब्द-समभि-रूढैवंभूता नयाः॥३३॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे प्रथमोऽध्यायः॥

द्वितीयोऽध्यायः

औप-शमिक-क्षायिकौ भावौ मिश्रश्च जीवस्य स्वतत्त्व-मौदयिक-पारिणामिकौ च॥१॥ द्वि-नवाष्टा-दशैक-विंशति-त्रि-भेदा यथा-क्रमम्॥२॥ सम्यक्त्व-चारित्रे॥३॥ ज्ञान-दर्शन-दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणि च॥४॥ ज्ञाना-ज्ञान-दर्शन-लब्धयश्-चतुस्त्रि-त्रि पञ्चभेदाः सम्यक्त्व-चारित्र-संयमा-संयमाश्च॥५॥ गति-कषाय-लिङ्ग-मिथ्यादर्शना-ज्ञाना-संयता सिद्ध-लेश्याश्-चतुश्-चतुस्त्र्ये-कै-कै-कैक-षड्भेदाः॥६॥जीव-भव्या-भव्यत्वानि च॥७॥ उपयोगो लक्षणम्॥८॥ स द्विविधोऽष्ट-चतुर्भेदः॥९॥ संसारिणो मुक्ताश्च॥१०॥ सम-नस्का-मनस्काः॥११॥ संसारिणस्-त्रस-स्थावराः॥१२॥ पृथिव्यप्तेजो-वायु-वनस्पतयः स्थावराः॥१३॥ द्वीन्द्रिया-दयस्त्रसाः॥१४॥ पञ्चेन्द्रियाणि॥१५॥ द्विविधानि ॥१६॥ निर्वृत्युप-करणे द्रव्येन्द्रियम्॥१७॥ लब्ध्युपयोगौ भावेन्द्रियम् ॥१८॥ स्पर्शन-रसन-घ्राण-चक्षुः श्रोत्राणि॥१९॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्ण-शब्दास्तदर्थाः॥२०॥ श्रुत-मनिन्द्रियस्य॥२१॥ वनस्पत्यन्ताना-मेकम्॥२२॥ कृमि-पिपीलिका-भ्रमर-मनुष्यादीना-मेकैक-वृद्धानि॥२३॥ संज्ञिनः समनस्काः॥२४॥ विग्रह-गतौ कर्म-योगः ॥२५॥ अनुश्रेणि गतिः॥२६॥ अविग्रहा जीवस्य॥२७॥ विग्रहवती च संसारिणः प्राक् चतुर्भ्यः॥२८॥ एक-समया-विग्रहा॥२९॥ एकं द्वौ त्रीन्वाना-हारकः॥३०॥ सम्मूर्च्छन-गर्भोपपादा जन्म॥३१॥ सचित्त-शीत-संवृताः सेतरा मिश्राश्-चैकशस्-तद्योनयः॥३२॥ जरायु-जाण्डज-पोतानां गर्भः॥३३॥ देव-नारकाणा-मुपपादः॥३४॥ शेषाणां सम्मूर्च्छनम्॥३५॥ औदारिक-वैक्रियिकाहारक-तैजस-कार्मणानि शरीराणि॥३६॥ परं परं सूक्ष्मम्॥३७॥ प्रदेशतोऽसंख्येय-गुणं प्राक् तैजसात्॥३८॥ अनंत-गुणे परे॥३९॥ अप्रतीघाते॥४०॥ अनादि-सम्बन्धे च॥४१॥ सर्वस्य॥४२॥ तदादीनि भाज्यानि युगपदे-कस्मिन्ना-चतुर्भ्यः॥४३॥ निरुप-भोग-मन्त्यम्॥४४॥ गर्भ-

सम्मूर्च्छनज-माद्यम् ॥४५॥ औपपादिकं वैक्रियिकम्॥ ४६॥ लब्धि-प्रत्ययं च॥४७॥ तैजस-मपि॥४८॥ शुभं विशुद्ध-मव्याघाति चाहारकं प्रमत्त-संयतस्यैव॥४९॥ नारक-सम्मूर्च्छिनो नपुंसकानि॥५०॥ न देवाः॥५१॥ शेषास्-त्रिवेदाः॥५२॥ औपपादिक-चरमोत्तम-देहा-संख्येय-वर्षा-युषोऽनप-वर्त्या-युषः॥५३॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे द्वितीयोऽध्यायः॥

तृतीयोऽध्यायः

रत्न-शर्करा-बालुका-पङ्क-धूम-तमो-महातमः-प्रभा-भूमयो घनाम्बु-वाता-काश-प्रतिष्ठाः सप्ता-धोऽधः॥१॥ तासु त्रिंशत्-पञ्च-विंशति-पञ्चदश-दश-त्रि-पञ्चोनैक-नरक-शत-सहस्राणि पञ्च चैव यथाक्रमम्॥२॥ नारका नित्या-शुभतर-लेश्याः परिणाम-देह-वेदना-विक्रियाः॥३॥ परस्परो-दीरित-दुःखाः॥४॥ संक्लिष्टा-सुरो-दीरित-दुःखाश्च प्राक्-चतुर्थ्याः॥५॥ तेष्वेक-त्रि-सप्त-दश-सप्तदश-द्वाविंशति-त्रयस्-त्रिंशत्-सागरो-पमा सत्त्वानां परा स्थितिः॥६॥ जम्बूद्वीप-लवणो-दादयः शुभ-नामानो द्वीप-समुद्राः॥७॥ द्वि-र्द्वि-र्विष्कम्भाः पूर्व-पूर्व-परिक्षेपिणो वलया-कृतयः॥८॥ तन्मध्ये मेरु-नाभि-र्वृत्तो योजन-शत-सहस्र-विष्कम्भो जम्बूद्वीपः॥९॥ भरत-हैमवत-हरि-विदेह-रम्यक-हैरण्य-वतैरा-वत-वर्षाः क्षेत्राणि॥१०॥ तद्-विभाजिनः पूर्वा-परायता हिमवन्-महाहिमवन्-निषध-नील-रुक्मि-शिखरिणो वर्षधर-पर्वताः॥११॥ हेमार्जुन-तपनीय-वैडूर्य-रजत-हेममयाः॥१२॥ मणि-विचित्र-पार्श्वा उपरि मूले च तुल्य-विस्ताराः॥१३॥ पद्म-महापद्म-तिगिञ्छ-केसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीका-ह्रदास्-तेषा-मुपरि॥१४॥ प्रथमो योजन-सहस्रायामस्-तदर्ध विष्कम्भो ह्रदः॥१५॥ दश-योजना-वगाहः॥१६॥ तन्मध्ये योजनं पुष्करम्॥१७॥ तद्-द्विगुण-द्विगुणा ह्रदाः पुष्कराणि च॥१८॥ तन्-निवासिन्यो देव्यः श्री-ह्री-धृति-कीर्ति-बुद्धि-लक्ष्म्यः पल्यो-पमस्थितयः ससामानिक-परिषत्काः॥ १९॥ गङ्गा-सिन्धु-रोहि-द्रोहि-तास्या-हरिद्-धरिकान्ता-सीता-सीतोदा-नारी-नरकांता-सुवर्ण-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदाः सरितस्-तन्मध्यगाः॥२०॥ द्वयो-र्द्वयोः पूर्वाः पूर्वगाः॥२१॥ शेषास्-त्वपरगाः॥ २२॥ चतुर्दश-नदी-सहस्र-परिवृता गङ्गा-सिन्ध्वादयो नद्यः॥२३॥ भरतः षड्विंशति-पञ्चयोजन-शत-विस्तारः षट्चैकोन-विंशति-भागा योजनस्य॥२४॥ तद्द्विगुण-द्विगुण-विस्तारा वर्षधर-

वर्षा विदेहान्ताः॥२५॥ उत्तरा दक्षिण तुल्याः॥२६॥ भरतै-रावतयो-र्वृद्धि-ह्रासौ-षट्समयाभ्या-मुत्सर्पिण-यवसर्पिणीभ्याम्॥२७॥ ताभ्यामपरा भूमयोऽवस्थिताः॥२८॥एक-द्वि-त्रि-पल्योपम-स्थितयो हैमवतक-हारिवर्षक-दैव-कुरवकाः॥२९॥ तथोत्तराः ॥३०॥ विदेहेषु संख्येय-कालाः॥३१॥ भरतस्य विष्कम्भो जम्बूद्वीपस्य नवति-शत-भागः॥ ३२॥ द्विर्धातकी-खण्डे॥३३॥ पुष्करार्द्धे च॥३४॥ प्राङ्-मानुषोत्तरान्-मनुष्याः॥३५॥ आर्या-म्लेच्छाश्च॥३६॥ भरतै-रावत-विदेहाः कर्म-भूमयोऽन्यत्र देव-कुरूत्तर-कुरुभ्यः॥३७॥ नृस्थिती परावरे त्रिपल्यो-पमान्त-र्मुहूर्ते॥३८॥ तिर्यग्योनि-जानां च॥३९॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे तृतीयोऽध्यायः॥

चतुर्थोऽध्यायः

देवाश्-चतुर्णिकायाः॥१॥ आदितस्-त्रिषु पीतान्त-लेश्याः॥ २॥ दशाष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाः कल्पोप-पन्न-पर्यन्ताः॥३॥ इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषदात्म-रक्ष-लोकपाला-नीक-प्रकीर्णका-भियोग्य-किल्विषि-काश्चैकशः॥४॥ त्रायस्-त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्या व्यन्तर-ज्योतिष्काः॥५॥ पूर्वयो-र्द्वीन्द्राः॥६॥ काय-प्रवीचारा आ ऐशानात्॥७॥ शेषाः स्पर्श-रूप-शब्द-मनः प्रवीचाराः॥८॥ परेऽप्रवीचाराः॥९॥ भवन-वासिनोऽसुरनाग-विद्युत्-सुपर्णाग्नि-वातस्-तनितो-दधि-द्वीप-दिक्कुमाराः॥१०॥ व्यन्तराः किन्नर-किम्पुरुष-महोरग-गन्धर्व-यक्ष-राक्षस-भूत-पिशाचाः॥ ११॥ ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्र-मसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णक-तार-काश्च॥१२॥ मेरु-प्रदक्षिणा नित्य-गतयो नृलोके॥१३॥ तत्कृतः काल-विभागः॥१४॥ बहि-रवस्थिताः॥१५॥ वैमानिकाः॥१६॥ कल्पोप-पन्नाः कल्पा-तीताश्च॥१७॥ उपर्युपरि॥१८॥ सौधर्मैशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रा-रेष्वानत-प्राणतयो-रारणा-च्युतयो र्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्ता-परा-जितेषु सर्वार्थ-सिद्धौ च॥ १९॥ स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्-धीन्द्रिया-वधि-विषयतोऽधिकाः॥२०॥ गति-शरीर-परिग्रहाभि-मानतो हीनाः॥२१॥ पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्या द्वि-त्रि शेषेषु॥२२॥ प्राग्-ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः॥२३॥ ब्रह्म-लोकालया लौकांतिकाः॥२४॥ सारस्वता-दित्य-वह्न्य-रुण-गर्दतोय-तुषि-ताव्या-बाधा-रिष्टाश्च॥२५॥ विजयादिषु द्विचरमाः॥२६॥ औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषास्-तिर्यग्-योनयः॥२७॥ स्थिति-

रसुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्यो-पमार्द्ध-हीन-मिताः॥२८॥ सौधर्मैशानयोः सागरोपमे-अधिके॥२९॥ सानत्कुमार-माहेन्द्रयोः सप्त॥३०॥ त्रि-सप्त-नवैका-दश-त्रयोदश-पञ्चदशभि-रधिकानि तु॥३१॥ आरणा-च्युता-दूर्ध्व-मेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च॥३२॥ अपरा पल्योपम-मधिकम्॥३३॥ परतःपरतः पूर्वा-पूर्वा-नन्तरा॥ ३४॥ नारकाणां च द्वितीयादिषु॥३५॥ दश-वर्ष-सहस्राणि प्रथमायाम्॥३६॥ भवनेषु च॥३७॥ व्यन्तराणां च॥३८॥ परा पल्योपम-मधिकम्॥३९॥ ज्योतिष्काणां च॥४०॥ तदष्ट-भागोऽपरा॥४१॥ लौकान्तिका-नामष्टौ सागरो-पमाणि सर्वेषाम्॥ ४२॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः॥

पंचमोऽध्यायः

अजीव-काया-धर्मा-धर्मा-काश-पुद्गलाः॥१॥ द्रव्याणि॥ २॥ जीवाश्च॥३॥ नित्या-वस्थितान्यरूपाणि॥४॥ रूपिणः पुद्गलाः॥ ५॥ आ आकाशा-देक-द्रव्याणि॥६॥ निष्क्रियाणि च॥७॥ असंख्येयाः प्रदेशा धर्मा-धर्मैक-जीवानाम्॥८॥ आका-शस्या-नन्ताः॥९॥ संख्येया-संख्ये-याश्च पुद्गलानाम्॥१०॥ नाणोः॥११॥ लोका-काशेऽवगाहः॥१२॥ धर्मा-धर्मयोः कृत्स्ने॥१३॥ एक-प्रदेशा-दिषु भाज्यः पुद्गलानाम्॥१४॥ असंख्येय-भागादिषु जीवानाम्॥१५॥ प्रदेश-संहार-विसर्पाभ्यां प्रदीपवत्॥१६॥ गति-स्थित्यु-पग्रहौ धर्मा-धर्मयो-रुपकारः॥१७॥ आकाशस्या-वगाहः॥१८॥ शरीर-वाङ्मनः प्राणा-पानाः पुद्गलानाम्॥१९॥ सुख-दुःख-जीवित-मरणो-पग्रहाश्च॥२०॥ परस्परो-पग्रहो जीवानाम्॥२१॥ वर्तना-परिणाम-क्रियाः परत्वा-परत्वे च कालस्य॥२२॥ स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णवन्तः पुद्गलाः॥२३॥ शब्द-बन्ध-सौक्ष्म्य-स्थौल्य-संस्थान-भेद-तमश्छाया-तपोद्योत-वन्तश्च॥२४॥ अणवः स्कन्धाश्च॥२५॥ भेद-संघातेभ्यः उत्पद्यन्ते॥२६॥ भेदा-दणुः॥२७॥ भेद-संघाताभ्यां चाक्षुषः॥२८॥ सद् द्रव्य-लक्षणम्॥२९॥ उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य-युक्तं सत्॥३०॥ तद्-भावाव्ययं नित्यम्॥३१॥ अर्पिता-नर्पित-सिद्धेः॥३२॥ स्निग्ध-रूक्षत्वाद् बन्धः॥३३॥ न जघन्य-गुणानाम्॥३४॥ गुण-साम्ये सदृशानाम्॥३५॥ द्व्यधिकादि-गुणानां तु॥३६॥ बन्धेऽधिकौ पारिणामिकौ च॥३७॥ गुण-पर्ययवद् द्रव्यम्॥३८॥ कालश्च॥३९॥ सोऽनन्त-समयः॥४०॥ द्रव्याश्रया निर्गुणाः गुणाः॥४१॥ तद्भावः परिणामः॥४२॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे पंचमोऽध्यायः॥

षष्ठोऽध्यायः

काय-वाङ्-मनः-कर्म योगः॥१॥ स आस्रवः॥२॥ शुभः पुण्यस्या-शुभः पापस्य॥३॥ सकषाया-कषाययोः साम्पराय-केर्या-पथयोः॥४॥ इन्द्रिय-कषाया-व्रतक्रियाः पञ्च चतुः पञ्च-पञ्चविंशति-संख्याः पूर्वस्य भेदाः॥५॥ तीव्र-मन्द-ज्ञाता-ज्ञात-भावाधि-करण-वीर्य-विशेषेभ्यस्-तद्-विशेषः॥६॥ अधिकरणं जीवा-जीवाः॥७॥ आद्यं संरम्भ-समा-रम्भा-रम्भ-योग-कृत-कारितानु-मत-कषाय-विशेषैस्-त्रिस्-त्रिस्-त्रिश्-चतुश्-चैकशः॥ ८॥ निर्वर्तना-निक्षेप-संयोग-निसर्गा द्वि-चतुर्द्वि-त्रि-भेदाः परम्॥ ९॥ तत्प्रदोष-निह्नव-मात्सर्यान्-तराया-सादनोप-घाता ज्ञान-दर्शनावरणयोः॥१०॥ दुःख-शोक-तापा-क्रन्दन-वध-परिदेव-नान्यात्म-परोभय-स्थानान्य-सद्-वेद्यस्य॥११॥भूत-व्रत्यनु-कम्पा-दान-सराग संयमादियोगः क्षान्तिः शौच-मिति सद्-वेद्यस्य॥ १२॥ केवलि-श्रुत-संघ-धर्म-देवा-वर्णवादो दर्शन-मोहस्य॥१३॥ कषायो-दयात्तीव्र-परिणामश्-चारित्र-मोहस्य॥ १४॥ बह्वारम्भ-परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः॥१५॥ माया तैर्यग्योनस्य॥१६॥ अल्पारम्भ परिग्रहत्वं मानुषस्य॥१७॥ स्वभाव-मार्दवं च॥१८॥ निः शील-व्रतत्वं च सर्वेषाम्॥१९॥ सराग-संयम-संयमासंयमा-कामनिर्जरा-बाल-तपांसि दैवस्य॥२०॥ सम्यक्त्वं च॥२१॥ योग-वक्रता विसंवादनं चा-शुभस्य नाम्नः॥२२॥ तद्-विपरीतं शुभस्य॥२३॥ दर्शन-विशुद्धि-र्विनय-सम्पन्नता शील-व्रतेष्वनती-चारोऽभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोग-संवेगौ शक्तितस्त्याग-तपसी साधु-समाधि-वैयावृत्त्य - करण - महदा-चार्य बहुश्रुत-प्रवचन भक्ति-रावश्यका-परि-हाणि-र्मार्ग-प्रभावना-प्रवचन-वत्सलत्व-मिति तीर्थकरत्वस्य॥ २४॥ परात्म-निन्दा-प्रशंसे स-दसद्-गुणोच्छादनोद्-भावने च नीचै-र्गोत्रस्य॥ २५॥ तद्-विपर्ययो नीचै-र्वृत्त्य-नुत्सेकौ चोत्तरस्य॥ २६॥ विघ्नकरण-मन्तरायस्य॥२७॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे षष्टोऽध्यायः॥

सप्तमोऽध्यायः

हिंसा-नृतस्तेया-ब्रह्म-परिग्रहेभ्यो विरति-र्व्रतम्॥१॥ देश-सर्वतोऽणु-महती॥२॥ तत्स्थैर्यार्थं भावनाः पञ्च पञ्च॥३॥ वाङ्मनो-गुप्तीर्या-दान-निक्षेपण-समित्या-लोकित-पान-भोजनानि पञ्च॥४॥ क्रोध-लोभ-भीरुत्व-हास्य-प्रत्याख्यानान्-यनुवीचि-भाषणं च पञ्च॥५॥ शून्यागार विमोचिता-

वास-परो-परोधा-करण-भैक्ष्य-शुद्धि-सधर्मा-विसंवादाः पञ्च॥६॥ स्त्री-राग-कथाश्रवण-तन्मनो-हरांग-निरीक्षण-पूर्व-रतानुस्-मरण-वृष्येष्ट-रस-स्व-शरीर-संस्कार-त्यागाः पञ्च॥७॥ मनोज्ञा-मनोज्ञेन्द्रिय-विषय-राग-द्वेष-वर्जनानि पञ्च॥८॥ हिंसा-दिष्विहा-मुत्रा-पाया-वद्य-दर्शनम्॥९॥ दुःख-मेव वा॥१०॥ मैत्री-प्रमोद-कारुण्य-माध्यस्थ्यानि च सत्त्व-गुणाधिक-क्लिश्य-माना-विनयेषु॥११॥ जगत्काय-स्वभावौ वा संवेग-वैराग्यार्थम्॥१२॥ प्रमत्त-योगात्प्राण- व्यपरोपणं हिंसा॥१३॥ अस-दभिधान-मनृतम्॥ १४॥ अदत्ता-दानं स्तेयम्॥१५॥ मैथुन-मब्रह्म॥१६॥ मूर्च्छा परिग्रहः॥ १७॥ निःशल्यो-व्रती॥१८॥ अगार्य-नगारश्च॥१९॥ अणुव्रतोऽगारी॥ २०॥ दिग्देशा-नर्थदण्ड-विरति-सामायिक-प्रोषधोपवासोपभोग-परिभोग-परिमाणा-तिथि-संविभाग-व्रत-सम्पन्नश्च॥२१॥ मारणांतिकीं सल्लेखनां जोषिता॥२२॥ शङ्का-कांक्षा-विचिकित्-सान्यदृष्टि-प्रशंसा-संस्तवाः सम्यग्दृष्टे-रतिचाराः॥२३॥ व्रतशीलेषु पञ्च पञ्च यथाक्रमम्॥२४॥ बन्ध-वधच्छेदाति-भारारोप-णान्न-पान-निरोधाः॥२५॥ मिथ्योपदेश-रहोभ्याख्यान - कूटलेख-क्रिया-न्यासापहार-साकार-मन्त्र-भेदाः॥२६॥ स्तेन-प्रयोग-तदा-हृता-दान-विरुद्ध-राज्यातिक्रम-हीनाधिक-मानोन्-मान-प्रतिरूपक-व्यवहाराः॥२७॥ परविवाह-करणेत्वरिका-परिगृहीता-परिगृहीता-गमनानङ्ग-क्रीडा-काम-तीव्राभिनिवेशाः॥२८॥ क्षेत्र-वास्तु-हिरण्य-सुवर्ण-धन-धान्य-दासी-दास-कुप्य-भाण्ड-प्रमाणा-तिक्रमाः॥२९॥ ऊर्ध्वा- धस्तिर्यग्व्यतिक्रम-क्षेत्रवृद्धि-स्मृत्यन्तरा-धानानि॥३०॥ आनयन-प्रेष्यप्रयोग-शब्द-रूपानुपात-पुद्गल-क्षेपाः॥३१॥ कन्दर्प-कौत्कुच्य-मौखर्या-समीक्ष्याधिकरणोपभोग-परिभोगा-नर्थक्यानि॥३२॥ योग-दुष्प्रणि-धाना-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि॥३३॥ अप्रत्य-वेक्षिता-प्रमार्जितोत्सर्गादान-संस्तरोप-क्रमणा-नादर-स्मृत्यनु-पस्थानानि॥३४॥ सचित्त-सम्बन्ध-सम्मिश्रा-भिषव-दुःपक्वाहाराः॥३५॥ सचित्त-निक्षेपा-पिधान-परव्यपदेश-मात्सर्य-कालातिक्रमाः॥३६॥ जीवित-मरणा-शंसा-मित्रानुराग-सुखानुबन्ध निदानानि॥३७॥ अनुग्रहार्थं स्वस्याति-सर्गो दानम्॥३८॥ विधिद्रव्य दातृ-पात्र-विशेषात्-तद्विशेषः॥ ३९॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे सप्तमोऽध्यायः॥

अष्टमोऽध्यायः

मिथ्या-दर्शना-विरति-प्रमाद-कषाय-योगा बन्ध-हेतवः॥१॥ सकषायत्वाज्-जीवः कर्मणो योग्यान् पुद्गला-नादत्ते स बन्धः॥ २॥ प्रकृति-स्थित्यनुभव-प्रदेशास् तद्-विधयः॥ ३॥ आद्यो ज्ञान-दर्शनावरण-वेदनीय-मोहनी-यायु-र्नाम-गोत्रान्तरायाः॥४॥ पञ्च-नव-द्व्यष्टा-विंशति-चतुर्द्वि-चत्वा-रिंशद्-द्वि-पञ्च-भेदा यथाक्रमम्॥५॥ मति-श्रुता-वधि-मनःपर्यय-केवलानाम्॥६॥ चक्षु-रचक्षु-रवधि-केवलानां निद्रा-निद्रानिद्रा-प्रचला-प्रचलाप्रचला-स्त्यान-गृद्धयश्च॥७॥ स-दसद्-वेद्ये॥८॥ दर्शन-चारित्र-मोहनीया-कषाय-कषाय-वेदनी-याख्यास्-त्रि-द्वि-नव-षोडश-भेदाः सम्यक्त्व-मिथ्यात्व-तदु-भयान्य-कषाय-कषायौ-हास्य-रत्यरति-शोक-भय-जुगुप्सा-स्त्री-पुन्-नपुंसक-वेदा अनन्तानु-बन्ध्य-प्रत्याख्यान-प्रत्याख्यान-संज्वलन-विकल्पाश्-चैकशः क्रोध-मान-माया-लोभाः॥९॥ नारक-तैर्यग्योन-मानुष-दैवानि॥ १०॥ गति-जाति-शरीराङ्गो-पाङ्ग-निर्माण-बंधन-संघात-संस्थान-संहनन-स्पर्श-रस-गंध-वर्णानु-पूर्व्यगुरु-लघूपघात-परघाता-तपो-द्योतोच्छ्वास-विहायो-गतयः प्रत्येक-शरीर-त्रस-सुभग-सुस्वर-शुभ-सूक्ष्म-पर्याप्ति-स्थिरादेय-यशःकीर्ति-सेतराणि तीर्थकरत्वं च॥११॥ उच्चै-र्नीचैश्च॥१२॥ दान-लाभ-भोगोप-भोग-वीर्याणाम्॥१३॥ आदितस्-तिसृणा-मन्त-रायस्य च त्रिंशत्-सागरोपम-कोटी-कोट्यः परा स्थितिः॥१४॥ सप्तति-र्मोहनीयस्य॥ १५॥ विंशति-र्नाम-गोत्रयोः॥१६॥ त्रयस्-त्रिंशत्सागरो पमाण्यायुषः॥१७॥ अपरा द्वादश-मुहूर्ता वेदनीयस्य॥१८॥ नाम-गोत्रयो-रष्टौ॥१९॥ शेषाणा-मन्तर्मुहूर्ताः॥२०॥ विपाकोऽनुभवः॥ २१॥ स यथानाम॥२२॥ ततश्च निर्जरा॥२३॥ नाम-प्रत्ययाः सर्वतो योग-विशेषात् सूक्ष्मैक-क्षेत्रावगाह-स्थिताः सर्वात्म-प्रदेशेष्-वनन्तानन्त-प्रदेशाः॥२४॥ सद्-वेद्य-शुभायु-र्नाम-गोत्राणि पुण्यम्॥ २५॥ अतोऽन्यत्पापम्॥२६॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे अष्टमोऽध्यायः॥

नवमोऽध्यायः

आस्रव-निरोधः संवरः॥१॥ स गुप्ति-समिति-धर्मा-नुप्रेक्षा-परीषहजय चारित्रैः॥२॥ तपसा निर्जरा च॥३॥ सम्यग्योग-निग्रहो गुप्तिः॥४॥ ईर्या-भाषैषणा-दान-निक्षेपोत्सर्गाः समितयः॥५॥ उत्तम-क्षमा-मार्दवार्जव-शौच-सत्य-संयम-

तपस्त्यागा-किञ्चन्य-ब्रह्मचर्याणि धर्मः॥६॥ अनित्या-शरण-संसा-रैकत्वा-न्यत्वा-शुच्यास्रव संवर-निर्जरा-लोक-बोधिदुर्लभ-धर्म-स्वाख्या-तत्वानु-चिन्तन-मनुप्रेक्षाः॥७॥ मार्गाच्य-वन-निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः॥८॥ क्षुत्पिपासा-शीतोष्ण-दंशमशक-नाग्न्या-रति-स्त्री-चर्या-निषद्या-शय्या-क्रोश-वध-याचना-लाभ-रोग-तृण-स्पर्श-मल-सत्कार-पुरस्कार-प्रज्ञाज्ञाना-दर्शनानि९॥ सूक्ष्म-साम्पराय-छद्मस्थ-वीतरागयोश-चतुर्दश॥१०॥ एकादश जिने॥११॥ बादर-साम्पराये सर्वे॥१२॥ ज्ञानावरणे प्रज्ञाज्ञाने ॥१३॥ दर्शन-मोहान्तराययो-रदर्शना-लाभौ॥१४॥ चारित्र-मोहे नाग्न्या-रति-स्त्री-निषद्या-क्रोश-याचना-सत्कार-पुरस्काराः॥१५॥ वेदनीये शेषाः॥१६॥ एकादयो भाज्या-युगपदे-कस्मिन्-नैकोनविंशतेः॥१७॥ सामायिकच्छेदोपस्थापना-परिहार-विशुद्धि-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यात-मिति चारित्रम्॥१८॥ अनशनाव-मौदर्य-वृत्तिपरिसंख्यान-रसपरित्याग-विविक्तशय्यासन-कायक्लेशा बाह्यं तपः॥१९॥ प्रायश्चित्त-विनय-वैयावृत्त्य-स्वाध्याय-व्युत्सर्ग-ध्यानान्युत्तरं॥२०॥ नव-चतुर्दश-पञ्च-द्विभेदा यथाक्रमं प्राग्-ध्यानात्॥२१॥ आलोचना प्रतिक्रमण-तदुभय-विवेक-व्युत्सर्ग-तपश्छेद-परिहारो-पस्थापनाः॥२२॥ ज्ञान-दर्शन-चारित्रोप-चाराः ॥२३॥ आचार्यो-पाध्याय-तपस्वि-शैक्ष्य-ग्लान-गण-कुल-संघ-साधु-मनोज्ञानाम्॥२४॥ वाचना-पृच्छनानु-प्रेक्षाम्नाय धर्मोपदेशाः॥२५॥ बाह्या-भ्यन्तरो-पध्योः ॥२६॥ उत्तम-संहननस्-यैकाग्र-चिन्ता-निरोधो ध्यान-मान्त-र्मुहूर्तात्॥२७॥ आर्त-रौद्र-धर्म्य-शुक्लानि॥२८॥ परे मोक्ष-हेतू॥२९॥ आर्त-ममनोज्ञस्य सम्प्रयोगे तद्-विप्रयोगाय स्मृति-समन्वाहारः॥३०॥ विपरीतं मनोज्ञस्य॥३१॥ वेदना-याश्च॥३२॥ निदानं च॥३३॥ त-दविरत-देशविरत-प्रमत्त-संयतानाम्॥३४॥ हिंसानृत-स्तेय-विषय-संरक्षणेभ्यो रौद्र-मविरत-देशविरतयोः॥३५॥ आज्ञापाय-विपाक-संस्थान-विचयाय धर्म्यम्॥३६॥ शुक्ले चाद्ये पूर्वविदः॥३७॥ परे केवलिनः॥३८॥ पृथक्-त्वैकत्व-वितर्क-सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति-व्युपरत-क्रिया-निवर्तीनि॥३९॥ त्र्येक-योग-काय-योगा-योगानाम्॥४०॥ एकाश्रये सवितर्क-वीचारे पूर्वे॥४१॥ अवीचारं द्वितीयम्॥४२॥ वितर्कःश्रुतम्॥४३॥ वीचारोऽर्थ-व्यञ्जन-योग-संक्रांतिः॥४४॥ सम्यग्दृष्टि-श्रावक-विरतानन्त-वियोजक-दर्शनमोह-क्षपकोप-शमकोपशान्तमोह क्षपक-क्षीणमोह-जिनाःक्रमशोऽ संख्येय गुण-निर्जराः॥४५॥ पुलाक-बकुश-कुशील-निर्ग्रन्थ-स्नातकाः निर्ग्रन्थाः॥४६॥ संयम-श्रुत-प्रतिसेवना-तीर्थ-लिंग-लेश्योपपाद-स्थान-विकल्पतः साध्याः॥४७॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे नवमोऽध्यायः॥

दशमोऽध्यायः

मोह-क्षयाज्ज्ञान - दर्शनावरणान्तराय - क्षयाच्च केवलम्॥१॥ बन्ध-हेत्वभाव-निर्जराभ्यां कृत्स्न-कर्म-विप्रमोक्षो मोक्षः॥२॥ औपशमिकादि-भव्यत्वानां च॥३॥ अन्यत्र केवल-सम्यक्त्व-ज्ञान-दर्शन-सिद्धत्वेभ्यः॥४॥ तदनन्तर-मूर्ध्वं गच्छत्या-लोकान्तात्॥५॥ पूर्व - प्रयोगा-दसंगत्वाद्-बन्धच्-छेदात्-तथा-गति-परिणामाच्च॥६॥ आविद्ध-कुलाल-चक्रवद्-व्यपगत-लेपालांबु-वदेरण्ड-बीज-वदग्नि शिखावच्च ॥७॥ धर्मास्ति-काया-भावात्॥८॥ क्षेत्र-काल-गति-लिंग-तीर्थ-चारित्र-प्रत्येक-बुद्ध-बोधित-ज्ञाना-वगाह-नान्तर-संख्याल्प-बहुत्वतः साध्याः॥९॥

॥ इति तत्त्वार्थसूत्रे दशमोऽध्यायः॥

अक्षर-मात्र पद-स्वर-हीनं, व्यञ्जन-संधि-विवर्जित-रेफम्।
साधुभिरत्र मम क्षमितव्यं, को न विमुह्यति शास्त्र-समुद्रे॥१॥

दशाध्याये परिच्छिन्ने, तत्त्वार्थे पठिते सति।
फलं स्या-दुपवासस्य, भाषितं मुनिपुङ्गवैः॥२॥

तत्त्वार्थ-सूत्र-कर्तारं, गृद्ध-पिच्छोप-लक्षितम्।
वन्दे गणीन्द्र-संजात-मुमास्वामी-मुनीश्वरम्॥३॥

पढम चउक्के पढमं पंचमे जाणि पुग्गलं तच्च।
छह सत्तमे हि आस्सव अट्ठमे बंध णायव्वो॥४॥
णवमे संवर णिज्जर दहमे मोक्खं वियाणे हि।
इह सत्त तच्च भणियं दह सुत्ते मुणिवरिं देहिं॥५॥
जं सक्कइ तं कीरइ, जं च ण सक्कइ तहेव सद्दहणं।
सद्दह-माणो जीवो, पावइ अजरा-मरं ठाणं॥६॥
तव-यरणं वय-धरणं, संजम-सरणं च जीव-दया-करणम्।
अन्ते समाहि-मरणं, चउगइ दुक्खं णिवारेई॥७॥
कोटिशतं द्वादश-चैव कोट्यो, लक्षाण्यशीतिस्-त्र्यधिकानि चैव।
पंचा-शदष्टौ च सहस्र-संख्य, मेतच्छ्रुतं पंचपदं नमामि॥८॥
अरहंत भासियत्थं, गणहर-देवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो, सुदणाण-महोवयं सिरसा॥९॥
गुरवः पांतु नो नित्यं, ज्ञान-दर्शन-नायकाः
चारित्रार्णव-गम्भीरा, मोक्ष-मार्गोप-देशकाः॥१०॥

===

जिनवाणी स्तुति

जाकर आते हैं भगवन्!, जाकर आते हैं।
पुनः आपके दर्शन को हम, जाकर आते हैं॥
जाकर आते हैं...॥
अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्दों अर्थों की।
आगम शास्त्र पठन पाठन में, हम सब भक्तों की॥
सरस्वती माँ हर त्रुटियों की, क्षमा चाहते हैं।
हमको केवलज्ञान दान दो, भक्त चाहते हैं
जाकर आते हैं...॥
हे श्रुतदेवी! चिंतामणि सम, चिंतित वस्तु दो।
वंदन करने वाले हमको, बोधि समाधि दो॥
निज स्वरूप परिणाम विशुद्धि धर्म चाहते हैं।
मिले मोक्ष सुख सिद्धि संपदा, 'सुव्रत' ध्याते हैं॥
जाकर आते हैं...॥

(कायोत्सर्ग...)

जिनवाणी स्तुति

(ज्ञानोदय)

अक्षर मात्रा पद स्वर व्यंजन, शब्द रेफ या अर्थों की।
शास्त्र पठन-पाठन में जो भी, कमियाँ रहीं अनर्थों की॥
आलस भूल कषायें मेरी, क्षमा करें कल्याणी माँ।
ज्ञान-दीप जलवाकर मेरा, भला करें जिनवाणी माँ॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र नवकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मंत्र जपें नौ बार॥

(कायोत्सर्ग...)

===